निशान-ए-आसमानी

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

निशान-ए-आसमानी

लेखक

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम

प्रकाशक

नज़ारत नश्र-व-इशाअत
सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

الحمد للہ والمنۃ

کہ رسالہ شافیہ کافیہ جو منکر القرآن پر حجت اللہ اور رد افتری کیلئے موجب ازدیاد ایمان و عرفان ہے

موسوم بہ

نشان آسمانی

جسکا دوسرا نام

شہادۃ الملہمین

بھی ہے

از تالیفات امام ہمام مہدی و مسیح موعود مجدد الوقت حضرت میرزا غلام احمد صاحب قادیانی

بماہ جنوری ۱۸۹۶ء مطبع ضیاء الاسلام قادیان دار الامان میں چھپا

قیمت فی جلد ۳/

باردوم

تعداد ۷۰۰

यह पूर्ण रूप से संतुष्टिदायक पुस्तक, जो विरोधियों पर अल्लाह की हस्ती का प्रमाण और मित्रों के ईमान और आध्यात्म ज्ञान को बढ़ाने का कारण है

जो

निशान-ए-आसमानी

से नामित

जिसका दूसरा नाम

शहादतुल मुल्हमीन

भी है

लेखक
युगावतार एवं मुजद्दिद हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह व महदी

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْمِ وَعَلٰی عَبْدِہِ الْمَسِیْحِ الْمَوْعُوْدِ

दो शब्द

जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह से खबर पाकर इमाम महदी और मसीह मौऊद होने का दावा किया तो विरोधियों की ओर से मुखालिफत का एक तूफान खड़ा हो गया । हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े उलमा मौलवी और गद्दीनशीन आपकी मुखालिफत में खड़े हो गए और चारों तरफ से फत्वों की बौछार होने लगी । लेकिन अल्लाह के अवतारों की यह सबसे बड़ी निशानी होती है कि वे इन बातों की परवाह नहीं करते और मुखालिफों के आरोपों का सटीक और मुँह तोड़ जवाब देते हैं । क्योंकि उनके प्रादुर्भाव का मूल उद्देश्य खोई हुई तौहीद (एकेश्वरवाद) को क़ायम करना और खुदा के प्रति लोगों के भ्रम और शंकाओं को दूर करना और उनके आरोपों का सन्तोषजनक जवाब देना होता है । ताकि मुखालिफों पर पूर्णतः तर्कपूर्ण निर्णायक फैसला हो जाए ।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इससे पूर्व दिसम्बर 1891 ई. में ''आसमानी फैसला'' नामक एक किताब की रचना की थी । जिस पर मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने ऐतराज़ किया था । आपने इस किताब में उसके ऐतराज़ों का मुँह तोड़ जवाब दिया है । इसके बाद सन् 1892 ई. में आप लुधियाना गए, जहाँ आपने सूफी मजज़ूब गुलाब शाह की विस्तारपूर्वक भविष्यवाणी उनके शिष्य करीम बख्श साहिब से

शपथपूर्वक लिखवाई और मई सन् 1892 ई. के अन्त में आपने ''निशान-ए-आसमानी'' नामक यह किताब लिखी । जिसका दूसरा नाम ''शहादतुल मुल्हमीन'' है जो मूलत: उर्दू भाषा में जून 1892 ई. में प्रकाशित हुई । दूसरी बार यह किताब पुन: आपके जीवन काल में ही सन् 1896 ई. में प्रकाशित हुई जिसमें आपने साईं गुलाब शाह साहिब की भविष्यवाणी और शाह नेमतुल्लाह वली रहमतुल्लाह अलैहि की भविष्यवाणी दर्ज फरमायी । जिनसे आपके दावे की सच्चाई प्रकट होती है ।

हिन्दी पाठकों के लाभ हेतु इमाम जमाअत अहमदिया पंचम की अनुमति से इस किताब का हिन्दी अनुवाद पहली बार प्रकाशित किया जा रहा है । जिसका अनुवाद आदरणीय अलीहसन साहिब एम.ए., फ़ाज़िल ने किया है । अल्लाह तआला उनको महान प्रतिफल प्रदान करे ।

आशा है कि यह किताब पाठकों के मार्ग दर्शन हेतु अत्यन्त लाभप्रद सिद्ध होगी । अल्लाह से दुआ है कि वह ऐसा ही करे ।

भवदीय

हाफ़िज़ मखदूम शरीफ

नाज़िर नश्रो इशाअत

सदर अंजुमन अहमदिया क़ादियान

اینست نشان آسمانی مثلش بنما اگر توانی
یا صوفیِ خویش را بروں آر یا توبہ بکن ز بدگمانی

अनुवाद :- इस किताब का नाम निशान-ए-आसमानी है अगर ला सकता है तो इसका उदाहरण ले आ । या तू अपने सूफी को मुकाबले के लिए बाहर निकाल या फिर बदगुमानी से तौबा कर ।

(अनुवादक)

आवश्यक निवेदन

उन सामर्थ्यवान मित्रों की सेवा में जो किसी हद तक धार्मिक कार्यों के लिए सहायता की सामर्थ्य रखते हैं

اے مرداں بکوشید و برائے حق بجوشید [1]

हालाँकि पहले ही से मेरे निश्छल मित्रगण ख़ुदा के लिए सेवा में इस तरह लगे हुए हैं कि मैं शुक्रिया अदा नहीं कर सकता और दुआ करता हूँ कि ख़ुदावन्द करीम उनको इन सारी सेवाओं का दोनों लोकों में अधिक से अधिक प्रतिफल दे। लेकिन इस समय विशेष तौर पर ध्यान दिलाने के लिए यह बात सामने आई है कि पहले तो हमारे केवल बाहरी[2] मुख़ालिफ़ थे और केवल बाहरी विरोध की हमें चिन्ता थी। अब वे लोग भी जो मुसलमान होने का दावा करते हैं बल्कि मौलवी और विद्वान कहलाते हैं घोर मुख़ालिफ़ हो गए हैं यहाँ तक कि वे लोगों को हमारी किताबों के खरीदने और पढ़ने से मना करते और रोकते हैं। इसलिए ऐसी कठिनाइयाँ सामने आ गई हैं जो देखने में भयानक मालूम होती हैं। लेकिन अगर हमारी जमाअत सुस्त न हो जाए तो शीघ्र ही ये सारी कठिनाइयाँ दूर हो जाएँगी। इस समय हम पर अनिवार्य हो गया है कि बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार की खराबियों के सुधार करने हेतु तन, मन, धन से कोशिश करें और अपनी ज़िन्दगी को इसी राह में न्योछावर कर दें और वे निष्काम कर्म दिखलाएं जिससे ख़ुदा तआला, जो छुपे हुए भेदों को जानने वाला और सीने में छुपी हुई बातों से परिचित है, प्रसन्न हो

---

[1] हे बहादुरो कोशिश करो और सच्चाई के लिए आगे बढ़ो। (अनुवादक)

[2] अर्थात मुसलमानों के अतिरिक्त दूसरे लोग। (अनुवादक)

जाए । इसी आधार पर मैंने इरादा किया है कि अब क़लम उठाकर फिर उसको उस समय तक बन्द न रखा जाए जब तक कि ख़ुदा तआला आन्तरिक और बाह्य विरोधियों पर पूर्णत: न्यायपूर्ण तर्क पूरा करके ईसा के वास्तविक हथियार से दज्जाल की जड़ को टुकड़े-टुकड़े न करे । लेकिन कोई इरादा ख़ुदा तआला के दिए हुए सामर्थ्य, कृपा, सहायता और रहमत के बिना अपने परिणाम को नहीं पहुँच सकता । ख़ुदा तआला की खुशखबरियों को देखते हुए जो बारिश की तरह बरस रही हैं, इस विनीत को यही आशा है कि वह अपने इस भक्त को नष्ट नहीं करेगा और अपने धर्म को उस खतरनाक अस्त-व्यस्त होने की अवस्था में नहीं छोड़ेगा जो अभी उस पर है परन्तु तौर पर सुन्नत के अनुसार मन अन्सारी इलल्लाह[1] भी कहना पड़ता है । इसलिए भाइयो जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ कि किताबें लिखने के काम को लगातार जारी रखने के लिए मेरा पक्का इरादा है और यह इच्छा है कि इस किताब के छपने के बाद जिसका नाम निशान-ए-आसमानी है किताब दाफिउल-वसाविस प्रकाशित की जाए और इसके बाद तुरन्त किताब 'हयातुन्नबी और ममातुल मसीह' जो यूरोप और अमेरिका के देशों में भी भेजी जाएगी प्रकाशित हो और इसके बाद तुरन्त बराहीन अहमदिया भाग-5 जिसका दूसरा नाम ज़रूरत-ए-क़ुरआन रखा गया है एक अलग किताब के तौर पर छपना शुरू हो लेकिन मैं इस काम को अनवरत चलते रहने के लिए यह व्यवस्था अच्छी समझता हूँ कि हर एक किताब जो मेरी ओर से प्रकाशित हो, सामर्थ्यवान मित्रगण उसकी खरीददारी से मुझको तन, मन, धन से इस तरह पर मदद दें कि अपनी

[1] अनुवाद :- अल्लाह के धर्म के लिए मेरा कौन मददगार होगा - अनुवादक ।

सामर्थ्यानुसार उसकी एक या कुछ कापियाँ खरीद लें । जिन किताबों की क़ीमत तीन आना या चार आना या उसके निकट हो उनको सामर्थ्य रखने वाले लोग अपनी समर्थ के अनुसार एक उचित संख्या तक ले सकते हैं और फिर वही रक़म दूसरी किताब के छपने में काम आ सकती है । अगर मेरी जमाअत में ऐसे लोग हों जिन पर धन दौलत और ज़ेवरात इत्यादि के कारण ज़कात देना अनिवार्य हो तो उनको समझना चाहिए कि इस समय इस्लाम धर्म जैसा ग़रीब और यतीम और बेकस कोई भी नहीं और ज़कात न देने में इस्लामी विधान के अनुसार जितनी डाँट-डपट और भर्त्सना वर्णित हुई है वह भी स्पष्ट है और निकट है कि ज़कात न देने वाला काफिर हो जाए । अतः मूल कर्तव्य है कि इसी राह में अर्थात इस्लाम की सहायता में ज़कात दी जाए । ज़कात में किताबें खरीदी जाएँ और मुफ़्त वितरित की जाएँ । इन किताबों के अतिरिक्त और भी मेरी रचनाएँ हैं जो बहुत ही लाभदायक हैं। जैसे किताब अहकामुल कुरआन और अरबईन फ़ी अलामातिल मुक़र्रिबीन और सिराज-ए-मुनीर और तफ़्सीर किताब-ए-अज़ीज़ । चूँकि किताब बराहीन अहमदिया का काम बहुत ज़रूरी है । इसलिए फुर्सत होने पर कोशिश की जाएगी कि ये किताबें भी बीच में प्रकाशित हो जाएँ । अब हर एक काम अल्लाह तआला के अधिकार में है । जो वह चाहता है करता है और वह हर एक चीज़ पर समर्थ है ।

विनीत

गुलाम अहमद

क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर

28 मई 1892 ई.

आवश्यक विज्ञापन

इस विनीत का इरादा है कि इस्लाम धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए ऐसी सुव्यवस्था की जाए कि हिन्दुस्तान के इलाकों में हर जगह हमारी ओर से धर्मोपदेशक और शास्त्रार्थकर्ता नियुक्त हों और लोगों को सच्चाई की ओर बुलाएँ ताकि संसार में इस्लाम के बारे में समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो परन्तु इस अशक्तता और जमाअत के अल्प संख्यक होने की अवस्था में यह इरादा पूर्णतया सम्पन्न नहीं हो सकता । इसलिए इस समय यह योजना बनाई है कि अगर हज़रत मौलवी मुहम्मद अहसन साहिब अमरोही जो एक प्रकाण्ड विद्वान और सत्यनिष्ठ और सदाचारी और इस्लाम के प्रेम में दिलोजान से न्यौछावर हैं, स्वीकार करें तो यथा सम्भव यह काम उनके सुपुर्द किया जाए, मौलवी साहिब बच्चों की शिक्षा और कुरआन व हदीस समझाने, धर्मोपदेश और शास्त्रार्थ में पारंगत हैं । बड़ी खुशी की बात है अगर वह इस काम में लग जाएँ लेकिन चूँकि इन्सान को गृहस्थी की हालत में जीविका के साधनों से छुटकारा नहीं । इसलिए प्राथमिक तौर पर यह विचार आवश्यक है कि मौलवी साहिब की आजीविका के लिए कोई उत्तम प्रबन्ध हो जाए अर्थात यह कि हमारी जमाअत में से हर एक समृद्धिशाली हमेशा के लिए जब तक ख़ुदा तआला चाहे उनकी आजीविका के लिए यथाशक्ति अपना कोई चन्दा निर्धारित करे और फिर जो कुछ निर्धारित हो तुरन्त उनके पास भेज दिया करे । दुनिया कुछ दिन का मुसाफ़िरख़ाना है आख़िरत (परलोक) के लिए नेक कामों के साथ तैयारी करनी चाहिए । मुबारक है वह व्यक्ति जो आख़िरत के लिए नेकियों का ढेर इकट्ठा करने के लिए

दिन-रात लगा हुआ है । इस विज्ञापन के पढ़ने पर जो लोग चन्दा के लिए तैयार हों वे इस विनीत को सूचित करें । सलामती हो उस पर जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया ।

विज्ञापक

विनीत

गुलाम अहमद

क़ादियान, ज़िला गुरदासपुर

26 मई सन् 1894 ई.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ وَالسَّلَامُ عَلٰی عِبَادِہِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی ❶

तत्पश्चात्

स्पष्ट हो कि इन कुछ पन्नों में उन कुछ औलिया (ऋषियों) और ख़ुदा में आसक्त लोगों की गवाहियाँ लिखी हैं जिन्होंने इस विनीत के आगमन से एक लम्बे समय पूर्व इस विनीत के बारे में खबर दी है । उन सब में से एक गुलाब शाह की भी भविष्यवाणी है जो हमारे इस ज़माने से तीस या इकत्तीस वर्ष पूर्व इस दुनिया से गुज़र चुका है हालाँकि यह भविष्यवाणी किताब इज़ाला: औहाम के पृष्ठ 707 में संक्षिप्त तौर पर प्रकाशित हो चुकी है लेकिन इस बार वर्णनकर्ता ने सारी बातों को अच्छी तरह याद करके पूर्णत: विस्तारपूर्वक उस भविष्यवाणी को बयान किया है और चाहा है कि अलग तौर पर वह भविष्यवाणी एक विज्ञापन में प्रकाशित कर दी जाए ।

वर्णनकर्ता अर्थात मियाँ करीम बख़्श जिस तरह इस भविष्यवाणी को पूर्ण विश्वास और सत्यनिष्ठा के जोश से बयान करता है उसको अगर कोई सत्याभिलाषी ध्यान से सुने तो सम्भव नहीं कि उसका एक स्पष्ट और आश्चर्यजनक प्रभाव उसके दिल पर पैदा न हो । मैंने मियाँ करीम बख़्श को अब मई सन् 1892 ई. में पुन: लुधियाना में बुलाकर इस भविष्यवाणी की उससे पुन: पूछताछ की और कई मज्लिसों में उसको क़सम देकर पूछा गया कि इस बारे में जो पूर्णत: सच-सच बात है और अच्छी तरह याद है वही बयान करे । लेशमात्र संदिग्ध बात बयान न करे और यह भी कहा गया कि

❶ समस्त प्रशंसा अल्लाह ही के लिए है । उसके चुने हुए बन्दों (भक्तों) पर सलामती हो - अनुवादक ।

अगर सर के एक बाल के बराबर भी कोई घटना के विपरीत बात या कोई संदिग्ध बात बयान करेगा जो ठीक-ठीक याद नहीं रही तो ख़ुदा तआला के सामने उसका जवाब देना पड़ेगा बल्कि सच्चाई की परीक्षा के उद्देश्य से बड़ी सख़्ती से उस पीर मनुष्य को कहा गया कि आप अब इस बात को खूब सोच लें और समझ लें कि अगर आप के बयान में एक शब्द भी घटना के ख़िलाफ़ होगा तो उसका बोझ आपकी गर्दन पर होगा और क़यामत के दिन वह ला'नत का तौक़ गर्दन में पड़ेगा जो झूठों की गर्दन में पड़ा करता है फिर बार-बार कहा गया कि हे मियाँ करीम बख़्श ! आप पीर आदमी हैं और जैसा कि सुना जाता है संयम और रोज़ा, नमाज़ की पाबन्दी से आपका ज़माना गुज़रा है । अब इस बात को याद रखो कि मियाँ गुलाब शाह की यह भविष्यवाणी, जो इस विनीत के बारे में आप बयान करते हैं अगर एक संदिग्ध बात है या घटना के विपरीत है तो उसके बयान करने से तुम्हारे पिछले तमाम् सुकर्म व्यर्थ हो जाएँगे और रुष्ट न होना नि:सन्देह समझो कि इस झूठ की सज़ा में तुम नर्क में डाले जाओगे । अगर पूरे तौर पर यह बात सच्ची नहीं तो मेरे लिए अपने ईमान को नष्ट मत करो । मैं न इस लोक में तुम्हारे काम आ सकता हूँ न उस लोक में । जो अपराधी बनकर ख़ुदा तआला के सामने जाएगा उसके लिए वह नर्क है जिसमें न वह मरेगा और न ज़िन्दा रहेगा । अभागा है वह इन्सान जो झूठ बोलकर अपने ख़ुदा को नाराज़ करे और बड़ा अभागा है वह व्यक्ति कि एक अपराध का काम करके सारी उम्र की नेकियाँ बर्बाद कर दे और याद रखो कि अगर कोई मेरे लिए किसी प्रकार का ख़ुदा तआला के सामने झूठ बोलेगा और कोई ख्वाब या कोई इल्हाम या कश्फ मेरे ख़ुश करने के लिए फैला देगा तो मैं उसको

कुत्तों से भी बुरा और सुअरों से भी गन्दा समझता हूँ और दोनों लोकों में उससे विमुख हूँ क्योंकि उसने एक अधम प्राणी के लिए अपने प्यारे ख़ुदा को झूठ बोलकर नाराज़ कर दिया । अगर हम धृष्ट और झूठे हो जाएँ और ख़ुदा तआला के सामने झूठ बोलने से न डरें तो हम से कुत्ते और सुअर हज़ार गुना अच्छे हैं । अतः यदि पाप किया है तो तौबा करो ताकि तबाह न हो जाओ । निःसन्देह समझो कि ख़ुदा तआला झूठ बोलने वाले को बिना दण्ड दिए नहीं छोड़ेगा । इस विनीत का कारोबार किसी इन्सान की गवाही पर आधारित नहीं । जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है और मैं उसके साथ हूँ, मेरे लिए वही शरण काफी है । निःसन्देह वह अपने भक्त को नष्ट नहीं करेगा और अपने अवतार को बर्बाद नहीं करेगा । ये वे सारी बातें हैं जो कई बार करीम बख़्श को कई मज्लिसों में कही गईं लेकिन उसने इन सब बातों को सुनकर एक दर्द से भरे हुए दिल के साथ ऐसा जवाब दिया जिससे रोना आता था और उसके शब्द-शब्द से मालूम होता था कि वह ख़ुदा के खौफ़ से डरकर पूरी सच्चाई से बयान कर रहा है और उसके बयान में करूणापूर्ण भाव और जो आर्द्रता थी, एक ऐसा असर था जिसके असर से शरीर पर कँपकँपी आती थी । अतः उस दिन पूरे विश्वास से समझा गया कि यह भविष्यवाणी इस व्यक्ति के खून में असर कर गई है और उसके ईमान को इससे उच्चकोटि का फायदा पहुँचा है । अतः हम नीचे उसका वह घोषणापत्र जो उसने प्रतापी ख़ुदा की क़सम ख़ाकर एक दर्द भरे बयान में लिखाया है लिखेंगे । उसके पढ़ने से पाठकगण जो न्याय और वास्तविकता को जानते हैं समझ लेंगे कि कैसी उच्चकोटि की वह गवाही है ।

इसके अतिरिक्त एक और भविष्यवाणी है जो ख़ुदा के एक

सच्चे भक्त ने'मतुल्लाह नामक ने जो हिन्दुस्तान में वली और कश्फ़ों के ज्ञान और ब्रह्मज्ञान के कारण मशहूर है अपने एक क़सीद: में लिखी है । यह महापुरुष हमारे ज़माने से सात सौ उन्चास वर्ष पहले गुज़र चुके हैं और लगभग इतनी ही अवधि उनके इस क़सीद: की रचना पर भी गुज़र चुकी है जिसमें यह भविष्यवाणी लिखी है । मौलवी मुहम्मद इस्माईल साहिब शहीद देहलवी जिस ज़माने में इस कोशिश में थे कि किसी तरह उनके पीर (गुरू) सैयद अहमद साहिब महदी-ए-वक़्त ठहरा दिए जाएँ । उस ज़माने में उन्होंने उस क़सीद: को लेकर बड़ी कोशिश की कि यह भविष्यवाणी उन पर चरितार्थ हो जाए यहाँ तक कि उन्होंने अपनी किताब के साथ भी उसको प्रकाशित कर दिया लेकिन उस भविष्यवाणी में वह पते और निशान दिए गए थे कि किसी तरह सैयद अहमद साहिब उन निशानों के पात्र नहीं ठहर सकते थे । हाँ यह सच है कि उस भविष्यवाणी के पात्र का नाम अहमद लिखा है अर्थात उस आने वाले का नाम अहमद होगा और यह भी संकेत पाया जाता है कि वह हिन्दुस्तान में होगा और आगे यह भी लिखा है कि वह तेरहवीं सदी हिजरी में प्रकट होगा । सारांशत: सरसरी विचार गुज़र सकता है कि सैयद अहमद साहिब में ये तीनों निशानियाँ थीं लेकिन थोड़ा सा ध्यान देने से ज्ञात होगा कि उस भविष्यवाणी का सैयद अहमद साहिब से कुछ भी संबंध नहीं क्योंकि सर्वप्रथम उन छन्दों से स्पष्ट है कि वह कथित मुजद्दिद (सुधारक) तेरहवीं सदी हिजरी के प्रारंभ में नहीं होगा बल्कि तेरहवीं सदी हिजरी के अन्तिम दिनों में कई घटनाओं और हादसों और उपद्रव के प्रकट होने के बाद पैदा होगा, अर्थात चौदहवीं सदी के सर पर होगा परन्तु स्पष्ट है कि सैयद अहमद साहिब ने तेरहवीं सदी हिजरी का आधा ज़माना भी

नहीं पाया फिर चौदहवीं सदी का मुजद्दिद (सुधारक) उनको कैसे ठहराया जाए । इसके अलावा सैयद साहिब ने यह दावा अपने मुँह से कहीं नहीं किया जो उनके बारे में बयान किया जाता है और कोई बयान उनका ऐसा प्रस्तुत नहीं किया जा सकता जिसमें यह दावा मौजूद हो और इन सब बातों से बढ़कर यह बात है कि शेख ने'मतुल्लाह वली साहिब ने उन छंदों में उस आने वाले के बारे में यह भी लिखा है कि वह महदी और ईसा भी कहलाएगा हालाँकि पूर्णतः स्पष्ट है कि सैयद अहमद साहिब ने कभी ईसा होने का दावा नहीं किया । फिर उन्हीं छंदों में एक यह भी संकेत किया है कि उसके बाद उसके गुण पर आने वाला उसका बेटा होगा जो उसकी यादगार होगा । अब पूरी तरह स्पष्ट है कि सैयद अहमद साहिब ने ऐसे विशेष गुण रखने वाले बेटे की कभी कोई भविष्यवाणी नहीं की और न कोई उनका ऐसा बेटा हुआ कि वह ईसा के रंग में रंगीन हो । फिर उन्हीं छंदों में एक यह भी संकेत है कि वह प्रादुर्भाव होने के समय से चालीस वर्ष तक उम्र पाएगा परन्तु स्पष्ट है कि सैयद अहमद साहिब अपने प्रादुर्भाव से लेकर केवल कुछ वर्ष ज़िन्दा रहकर मृत्यु पा गए लेकिन बराहीन अहमदिया के देखने से स्पष्ट होगा कि यह विनीत धर्म की पुनः स्थापना हेतु अपनी आयु के चालीसवें साल में अवतरित हुआ जिसके लगभग ग्यारह वर्ष बीत गए और उस भविष्यवाणी की दृष्टि से जो इज़ाला औहाम में लिखी हुई है अर्थात यह कि अस्सी वर्ष के लगभग आयु मिलेगी और इससे प्रादुर्भाव के चालीस वर्ष बनते हैं । शेष अल्लाह ज़्यादा जानता है।

सैयद साहिब की फिर दोबारा आने की उम्मीद रखना उसी प्रकार की उम्मीद है जो हज़रत एलिया और मसीह के आने पर रखी जाती है और भोले-भाले और अज्ञान आदमी अपने

समय को उस उम्मीद पर नष्ट कर रहे हैं । इसकी केवल इतनी वास्तविकता मालूम होती है कि अनादिकाल से ख़ुदा तआला का यह नियम चला आ रहा है कि कभी-कभी एक स्वर्गवासी महापुरुष के संसार में पुनः आने के बारे में किसी कश्फ़ वाले व्यक्ति के द्वारा सूचना दे देता है और उससे तात्पर्य केवल यह होता है कि उस व्यक्ति की प्रकृति और चरित्र लेकर कोई व्यक्ति पैदा होगा । अतः बनी इस्राईल के नबियों में से मलाकी नबी ने भी यह भविष्यवाणी की थी कि एलिया नबी जो आसमान पर उठाया गया है पुनः दुनिया में आएगा और जब तक एलिया दोबारा दुनिया में न आए तब तक मसीह नहीं आ सकता । इस भविष्यवाणी के ज़ाहिरी शब्दों पर ज़ाहिर परस्त यहूदी इस तरह जम गए कि उन्होंने हज़रत मसीह को उनके प्रादुर्भाव के समय स्वीकार न किया और बार-बार हज़रत मसीह ने उन्हें कहा कि एलिया से तात्पर्य ज़करिया का बेटा यूहन्ना है जो यह्या भी कहलाता है लेकिन उनकी नज़र तो आसमान पर थी कि वह आसमान से उतरेगा । अतः इस ज़ाहिरपरस्ती के कारण उन्होंने दो नबियों का इन्कार कर दिया अर्थात ईसा और यह्या का, और कहा कि ये सच्चे नबी नहीं हैं अगर ये सच्चे होते तो इनसे पहले जैसा कि ख़ुदा तआला ने अपनी पवित्र किताबों में खबर दी थी, एलिया नबी आसमान से उतरता । अतएव यहूदी लोग अब तक आसमान की ओर देख रहे हैं कि कब एलिया नबी उससे उतरता है और इन बद्नसीबों को पता नहीं कि एलिया नबी तो आसमान से उतर चुका और मसीह भी आ चुका । खेद है कि मात्र ज़ाहिर परस्ती ने दुनिया को कितना नुकसान पहुँचाया है फिर भी दुनिया नहीं समझती ।

एक सही हदीस में है कि हे मुसलमानो ! तुम आख़िरी

ज़माने में हर एक बात में यहूदियों का अनुसरण करोगे यहाँ तक कि अगर किसी यहूदी ने अपनी माँ से दुष्कर्म किया होगा तो तुम भी करोगे । यह हदीस और एलिया नबी का वृत्तान्त मसीह मौऊद के वृत्तान्त के साथ जिस पर आज कोलाहल हो रहा है मिलाकर पढ़ो और विचार करो और तनिक बुद्धि से काम लेकर सोचो कि एलिया नबी के दोबारा आने का विचार जो यहूदियों की अहले सुन्नत वल् जमाअत में एकमत होकर जम चुका था वह अन्ततः हज़रत ईसा की अदालत से कैसे निर्णय पाकर टुकड़े-टुकड़े हो गया । कहाँ गई उनकी सर्वसम्मति, सोचकर देखो कि क्या सचमुच एलिया नबी आसमान से उतर आया या एलिया से यह्या पुत्र ज़करिया अभिप्राय लिया गया ।

ख़ुदा तआला क़ुरआन करीम में बार-बार कहता है कि तुम हे मुसलमानो ! उन ठोकरों से बचो जो यहूदी लोग खा चुके हैं और उन विचारों से परहेज़ करो जिन पर जमने से यहूदी लोग कुत्ते और सुअर ठहराए गए । बुद्धिमान वह है जो दूसरे के हाल से नसीहत पकड़े और जिस जगह दूसरे का पैर फिसल चुका है उस जगह पैर रखने से डरे । खेद है कि आप लोग अपने लिए और अपनी क़ौम के लिए वही गढ़े खोद रहे हैं जो यहूदियों ने खोदे थे । ज़रा कष्ट उठाकर यहूदियों के धर्माचार्यों के पास जाएँ और पूछें कि यहूद ने हज़रत ईसा और हज़रत यह्या को स्वीकार क्यों न किया, तो यही उत्तर पाएँगे कि सच्चे मसीह के आने की आसमानी किताबों और बनी इस्राईल की हदीसों में यही निशानी लिखी है कि उससे पहले एलिया आसमान से उतरेगा और मसीह बादशाह और लश्कर वाला होगा। चूँकि एलिया नबी आसमान से नहीं उतरा और न मरयम के बेटे को ज़ाहिरी बादशाही मिली । इसलिए मरयम

का बेटा सच्चा मसीह नहीं है ।

अब आप लोग सोचें और अत्यन्त चिन्तन करें कि यह वृत्तान्त एलिया का मसीह मौऊद के वृत्तान्त से कितना मिलता-जुलता है और इस बात को समझ लें कि यद्यपि मसीह से पहले कई नबी हुए परन्तु किसी ने यह नहीं कहा कि एलिया से अभिप्राय कोई दूसरा व्यक्ति है । मसीह के प्रकटन के समय तक यहूदियों के तमाम् विद्वानों और धर्माचार्यों की इसी पर सहमति रही कि एलिया नबी फिर दुनिया में आएगा और आश्चर्य यह कि उनके मुल्हमों को भी यह इल्हाम न हुआ कि यह आस्था पूर्णतः ग़लत है और आसमानी किताब के ज़ाहिरी शब्द भी यही बताते रहे कि एलिया नबी पुनः दुनिया में आएगा लेकिन अन्त में हज़रत मसीह पर ख़ुदा तआला ने यह रहस्य पूरी तरह खोल दिया कि एलिया नबी पुनः नहीं आएगा बल्कि उसके आने से तात्पर्य उसके सदृश का आना है जो यह्या नबी है । सच्ची बात यह है कि भविष्यवाणियों में बहुत से रहस्य होते हैं जो अपने समय पर खुलते हैं और समय से पूर्व बड़े-बड़े आध्यात्म ज्ञानी भी उसकी वास्तविकता से अनभिज्ञ रहते हैं ।

किसी ने सच कहा है कि :-

هر سخن وقتے و هر نکته مقامے دارد [1]

وَكَمْ مِنْ عِلْمٍ تَرَكَ الْاَوَّلُوْنَ لِلْآخِرِيْنَ [2]

इसी तरह यह बात संभव है कि सैयद अहमद साहिब या

[1] हर बात का एक समय होता है और हर एक रहस्य अपना एक स्थान रखता है । (अनुवादक)

[2] कितनी ही बातें पहलों ने पिछलों के लिए छोड़ रखी हैं । (अनुवादक)

उनके किसी सदाचारी मुरीद (अनुयायी) को यह इल्हाम हुआ हो कि अहमद फिर दुनिया में आएगा और उन्होंने इसके यह अर्थ समझ लिए हों कि यही सैयद अहमद साहिब कुछ समय दुनिया से ग़ायब रहकर फिर दुनिया में आ जाएँगे । इस प्रकार के धोखों के उदाहरण दूसरी जातियों में भी पाए जाते हैं । लोग अल्लाह के नियम की ओर ध्यान नहीं देते और वे अर्थ जो अल्लाह के नियम के अनुकूल और अनुमान के अनुरूप हैं, छोड़ कर एक व्यर्थ और ग़लत अर्थ स्वीकार कर लेते हैं । अतः सैयद अहमद साहिब का पुनः आना जिसकी हमारे अधिकतर मुसलमान भाई बड़ी बेसब्री और शौक़ से प्रतीक्षा कर रहे हैं, वस्तुतः इसी प्रकार के विचारों में से है । हे लोगो ! आने वाला अहमद आ गया । अब तुम यही समझ लो कि सैयद अहमद आ गया क्योंकि मोमिन एक प्राण की तरह होते हैं । किसी कहने वाले ने क्या खूब कहा है कि :-

انبیاء در اولیاء جلوہ دہند
ہر زماں آیند در رنگے دِگر [1]

आह ! खेद है कि लोग इस बात से कैसे अज्ञान हैं कि हर एक प्राणी की मृत्यु अनिवार्य है और किसी मृतक का ज्यों का त्यों पुनः आना ख़ुदा तआला कभी प्रस्तावित नहीं करता और कोई सदाचारी आदमी दो मौतों और दो प्राण निकलने की स्थितियों से कदापि दुःख नहीं पा सकता । इस व्यर्थ विचार से कि मसीह इब्ने मरयम ज़िन्दा आसमान पर बैठा है बड़े-बड़े उपद्रव दुनियां में फैल गए हैं । मूलतः ईसाइयों के पास मसीह को ख़ुदा ठहराने की यही बुनियाद है और उसको ज़िन्दा मानने

[1] अनुवाद :- नबी हर ज़माने में औलिया (वली या ऋषियों) के रंग में झलक दिखाते हैं और एक नए रूप में प्रकट होते हैं । (अनुवादक)

से धीरे-धीरे उनका यह विचार हो गया कि अब बाप कुछ नहीं करता, सब कुछ उसने अपने बेटे को जो ज़िन्दा मौजूद है सुपुर्द कर रखा है । अत: यही पहला तर्क मसीह के ख़ुदा होने का ईसाइयों के पास है जिसका हमारे विद्वान समर्थन कर रहे हैं परन्तु सच बात यही है कि वह मृत्यु पा गए । क़ुरआन करीम उनकी मृत्यु पर उन्हीं 'शब्दों' से गवाही देता है जो दूसरे मृतकों के लिए प्रयोग किए गए हैं । हदीस बुख़ारी में हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उनकी मौत की पुष्टि करते हैं । इब्ने अब्बास जैसे महान सहाबी इस आयत 'तवफ़्फ़ा' से ईसा की मृत्यु ही बयान करते हैं । तिबरानी और हाकिम हज़रत आइशा से रिवायत करते हैं कि ईसा एक सौ बीस वर्ष तक जीवित रहा । इसी हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि ईसा से मेरी उम्र आधी है । अब स्पष्ट है कि अगर हज़रत ईसा मृत्यु नहीं पाए तो संभवत: हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भी अब तक ज़िन्दा ही होंगे ।

एक और रहस्य है जो क़ुरआन शरीफ़ पर विचार करने से ज्ञात होता है और वह यह है कि जब इन्सान ख़ुदा तआला के आध्यात्मिक प्रभावों से हिदायत पाकर दिन प्रतिदिन ख़ुदा, सत्य और सच्चाई की ओर बढ़ता है तथा अहंकार और स्वार्थपरता से संबंधित विषयों को छोड़ता जाता है तो अन्तत: उसकी आत्मशुद्धि का आख़िरी बिन्दु यह होता है कि वह पूर्णतया मनोवृत्ति की अपवित्रता और स्वार्थपरता संबंधी मनोभावनाओं से बाहर आकर शरीर को जो आत्मा का सिंहासन है, शारीरिक गन्दगी को दूर करके एक शुद्ध बूँद की तरह हो जाता है । उस समय वह ख़ुदा तआला की दृष्टि में केवल एक आत्मा होती है जो काम-भावना के

जलने के बाद शेष रह जाता है और ख़ुदा तआला की पूर्ण आज्ञाकारिता में फ़रिश्तों से एक समरूपता पैदा कर लेता है। तब उस स्थान पर पहुँचकर अल्लाह के निकट उसका अधिकार होता है कि उसको रूहुल्लाह या कलिमतुल्लाह कहा जाए । ये अर्थ एक प्रकार से उस हदीस से भी निकलते हैं जो इब्ने माजः और हाकिम ने अपनी किताबों में लिखा है कि - لا مهدی الاّ عیسیٰ **(ला महदी इल्ला ईसा)** अर्थात महदी के पूर्ण पद पर वही पहुँचता है जो पहले ईसा बन जाए अर्थात जब मनुष्य ख़ुदा की तल्लीनता में ऐसे उच्चस्तर पर पहुँच जाए कि केवल आत्मा रह जाए तब वह ख़ुदा के निकट रूहुल्लाह हो जाता है और आसमान में उसका नाम ईसा रखा जाता है और ख़ुदा तआला के हाथ से एक आध्यात्मिक जन्म उसको मिलता है जो कि किसी भौतिक बाप के द्वारा नहीं बल्कि ख़ुदा तआला की कृपादृष्टि उसको वह जन्म प्रदान करती है । अतः वास्तविक रूप से शुद्धता और ख़ुदा में तल्लीनता की विशेषता यही है कि भौतिक अन्धकारों से इतना विरक्त हो जाए कि केवल आत्मा शेष रह जाए । यही स्थान ईसा होने का है जिसको ख़ुदा तआला चाहता है पूर्ण तौर पर प्रदान करता है और दज्जालियत की पूर्ण श्रेणी यह है कि اَخْلَدَ اِلَی الْاَرْضِ (اعراف:۱۷۷) **(अख़लदा इलल अर्ज़)** के अनुसार स्वार्थ संबंधी गिरावटों की ओर अधिक से अधिक झुकता जाए यहाँ तक कि घोर अन्धकारों के गढ़ों में पड़कर साक्षात् अन्धकार हो जाए और स्वाभाविक तौर पर अन्धकार को चाहने वाला और प्रकाश का दुश्मन हो जाए। ईस्वी वास्तविकता के सामने दज्जालियत की वास्तविकता का होना एक अनिवार्य बात है क्योंकि विपरीत अपने से विपरीत द्वारा पहचाना जाता है । हमारे नबी

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय से ही यह दोनों जारी हैं हैं। इब्ने सय्याद का आप स.अ.व. ने दज्जाल नाम रखा और हज़रत अली कर्रमल्लाहो वज्हो को कहा कि तुझ में ईसा की समानता पाई जाती है । अतः ईसा और दज्जाल की बीज उसी समय से आरम्भ हो गया और समय गुज़रने के साथ-साथ जैसे-जैसे उपद्रव के अन्धकार दज्जालियत के रंग में कुछ अधिक होती गई वैसे-वैसे ईस्वी वास्तविकता वाले भी उसके मुक़ाबले पर पैदा होते गए यहाँ तक कि आख़िरी ज़माने में पाप और दुराचार, कुफ्र और पथभ्रष्टता फैल जाने के कारण और उन तमाम् बुराइयों के पैदा हो जाने के कारण जो पहले कभी इस ज़ोर और अधिकता से पैदा नहीं हुई थीं, बल्कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आख़िरी ज़माने में ही उनका फैलना भविष्यवाणी के तौर पर वर्णन किया था पूर्ण दज्जालियत प्रकट हो गई अतः उसके मुक़ाबले पर आवश्यक था कि पूर्ण ईसवियत भी प्रकट होती। याद रहे कि नबी करीम ने आख़िरी ज़माने में जिन बुरी बातों के फैलने की खबर दी थी उसी समूह का नाम दज्जालियत है । आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जिसकी तारें या यों कहो कि जिसकी सैकड़ों प्रकार की शाखाएं वर्णन की हैं । अतएव उनमें से वे मौलवी भी दज्जालियत के वृक्ष की शाखाएँ हैं जिन्होंने लकीर को अपनाया और क़ुरआन को छोड़ दिया । क़ुरआन करीम को पढ़ते तो हैं परन्तु उनके गलों से नीचे नहीं उतरता । अतः दज्जालियत इस ज़माने में मकड़ी की तरह बहुत से तार फैला रही है । काफिर अपने कुफ्र से और दोग़ला अपने दोग़लेपन से, शराबी शराब से और मौलवी अपने कथनानुसार कर्म न करने तथा अन्तःकरण की मलिनता द्वारा दज्जालियत की तारें

बुन रहे हैं । इन तारों को अब उस हथियार के अतिरिक्त कोई काट नहीं सकता जो आसमान से उतरे और उस हथियार को उस ईसा के अतिरिक्त कोई चला नहीं सकता जो उसी आसमान से उतरे । अत: ईसा उतर चुका وَكَانَ وعْدُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا❶ ।

अब हम नीचे उन भविष्यवाणियों को लिखते हैं जिनके लिखने का वादा था लेकिन हम युग की प्राथमिकता के अनुसार उचित समझते हैं कि पहले नेमतुल्लाह वली साहिब की भविष्यवाणी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के साथ लिखी जाए । फिर उसके बाद ख़ुदा की तौफ़ीक़ के साथ मियाँ गुलाब शाह की भविष्यवाणी जो कि मियाँ करीम बख़्श ने लिखाई है लिखी जाए । स्पष्ट हो कि दिल्ली के रहने वाले नेमतुल्लाह वली साहिब आस-पास और हिन्दुस्तान के पूर्ण वलियों में से मशहूर हैं । उनका काल उनके काव्य की दृष्टि से पाँच सौ साठ हिजरी बताया गया है । जिस किताब में उनकी यह भविष्यवाणी लिखी है उसके प्रकाशन का काल भी 25 मुहर्रम सन् 1868 ई. है । इस के अनुसार इन अश्आर (कविता के पद) के छपने पर भी इकतालीस (41) वर्ष बीत गए और यह कविता के पदों की पुस्तक 'अरबईन फ़ी अहवालिल् महदीय्यीन' के साथ शामिल हैं जिसकी छपने की तिथि उपरोक्त है जैसा कि हम पहले भी लिख आए हैं । इन कविता के पदों को किताब अरबईन के साथ शामिल करना इसी उद्देश्य से है ताकि किसी तरह सैयद अहमद साहिब को इन तमाम् महदियों में से एक महदी होना साबित किया जाए हालाँकि इसमें कुछ

❶ अनुवाद :- और यह अल्लाह का वादा था जो पूरा हो चुका - अनुवादक ।

सन्देह नहीं कि हदीसों में जहाँ-जहाँ महदी के नाम से किसी आने वाले के बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी लिखी है उसके समझने में लोगों ने बड़े-बड़े धोखे खाए हैं और ग़लत फ़हमी के कारण अधिकतर यही समझा गया कि हर एक महदी के शब्द से तात्पर्य अब्दुल्लाह का पुत्र मुहम्मद है जिसके बारे में कई हदीसें पाई जाती हैं लेकिन ध्यानपूर्वक पढ़ने से ज्ञात होगा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कई महदियों की ख़बर देते हैं उनमें से वह महदी भी है जिसका नाम हदीस में सुल्तान-ए-मश्रिक❶ रखा गया है जिसका प्रकटन पूर्वी देशों हिन्दुस्तान इत्यादि से और मूल देश फ़ारस से होना आवश्यक है । वस्तुत: उसी की प्रशंसा में यह हदीस है कि अगर ईमान सुरैया❷ से लटका हुआ होता या सुरैया पर होता तब भी वह सदात्मा वहीं से उसको ले लेता और उसी की यह निशानी भी लिखी है कि वह खेती करने वाला होगा । अत: यह बात पूर्णतया सिद्ध और निश्चित है कि हदीस की छ: प्रमाणित किताबों में कई महदियों का वर्णन है और उनमें से एक वह भी है जिसका प्रकटन पूर्वी देशों से लिखा है किन्तु कुछ लोगों ने रिवायतों के मिल-जुल जाने के कारण धोखा खाया है लेकिन अत्यन्त ध्यानाकर्षण वाली यह बात है कि स्वयं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने एक महदी के प्रकटन का युग वही समय बताया है जिसमें हम हैं और चौदहवीं सदी हिजरी का उसको मुजद्दिद

❶ अर्थात् पूरब का बादशाह - अनुवादक ।

❷ इसे कृत्तिका नक्षत्र भी कहते हैं जो पृथ्वी से अत्यधिक दूरी पर है तात्पर्य यह है कि ईमान लोगों के दिलों से बहुत दूर हो जाएगा - अनुवादक ।

(सुधारक) ठहराया है । जैसा कि हम आगे वर्णन करेंगे यद्यपि कि यह अवश्य साबित होता है कि चौदहवीं सदी हिजरी के सर पर हिन्दुस्तान में एक महान मुजद्दिद (सुधारक) पैदा होने वाला है लेकिन यह पूर्णत: हठधर्मी है कि सैयद अहमद साहिब को उसका पात्र ठहराया जाए क्योंकि हम पहले लिख चुके हैं कि सैयद साहिब ने चौदहवीं सदी हिजरी का युग नहीं पाया । अब नेमतुल्लाह वली साहिब के कुछ अश्आर जो हिन्दुस्तान में प्रकट होने वाले महदी के संबंध में हैं व्याख्या सहित नीचे लिखे जाते हैं :-

अश्आर

قدرتِ کردگار مے بینم   حالتِ روزگار مے بینم
از نجوم ایں سخن نمے گویم   بلکہ از کردگارمے بینم

अनुवाद :- अर्थात जो कुछ मैं इन अश्आर में लिखूँगा वह ज्योतिष की दृष्टि से ज्ञात नहीं बल्कि इल्हामी तौर पर मुझको ख़ुदा तआला की ओर से ज्ञात हुआ है ।

غین وزے۱۲سال چوں گذشت از سال   بوالعجب کاروبار مے بینم

अनुवाद :- अर्थात 1200 वर्ष गुज़रते ही अजीब-अजीब काम मुझको दिखाई देते हैं । तात्पर्य यह कि तेरहवीं सदी हिजरी के प्रारंभ होते ही एक क्रान्ति संसार में आएगी और आश्चर्यजनक बातें प्रकट होंगी और हिजरत के 1200 सौ वर्ष गुज़रने के बाद मैं देखता हूँ कि आश्चर्यजनक काम प्रकट होने प्रारंभ हो जाएँगे ।

گر در آئینۂ ضمیر جہاں   گرد و زنگ و غبارمے بینم

अनुवाद :- अर्थात तेरहवीं सदी हिजरी में संसार से सत्कर्म और संयम उठ जाएगा, उपद्रव फैल जाएँगे, पाप बढ़ जाएँगे, द्वेष चारों तरफ फैल जाएगा अर्थात सामान्य तौर पर वैमनस्य फैल जाएगा । भेदभाव और शत्रुताएं बढ़ जाएँगीं और मुहब्बत और हमदर्दी ख़त्म हो जाएगी परन्तु इन बातों को देखकर दु:ख नहीं करना चाहिए ।

ظلمت ظلم ظالمانِ دیار بے حد و بے شمارے بینم

अनुवाद :- अर्थात देशों में अत्याचार अपनी-चरम सीमा को पहुँच जएगा । शासक प्रजा पर और एक राजा दूसरे पर और एक भागीदार दूसरे भागीदार पर अत्याचार करेगा और ऐसे लोग कम होंगे जो न्याय पर क़ायम रहें ।

جنگ و آشوب و فتنہ و بیداد درمیان و کنارے بینم

अनुवाद :- अर्थात हिन्दुस्तान में चारों ओर बड़े-बड़े फित्ने उठेंगे और युद्ध और अत्याचार होगा ।

بندہ راخواجہ وش ہمے یا بم خواجہ رابندہ وارے بینم

अर्थात ऐसी क्रान्तियां प्रकट होंगी कि मालदार ग़रीब हो जाएगा और ग़रीब मालदार हो जाएगा ।

سکّۂ نو زنند بر رُخِ زر دَر ہمش کم عیارے بینم

अर्थात हिन्दुस्तान की पहली बादशाही समाप्त हो जाएगी और नया सिक्का चलेगा जो खरा नहीं होगा और यह सब कुछ तेरहवीं सदी हिजरी में एक के बाद एक प्रकट होगा ।

بعض اشجار بوستانِ جہاں بے بہار و ثمارے بینم

अर्थात अकाल पड़ेंगे और बाग़ों में फल नहीं लगेगें ।

غم مخور زانکہ من دریں تشویش　　خرمی وصلِ یارے بینم

अर्थात इस बेचैनी और फ़ित्ने के ज़माने में जो तेरहवीं सदी हिजरी का ज़माना है दु:खी नहीं होना चाहिए क्योंकि मैं देखता हूँ कि प्रियतम के मिलन की खुशी भी इन फित्नों के साथ है । तात्पर्य यह कि जब तेरहवीं सदी हिजरी के यह तमाम् फ़ित्ने चरमोत्कर्ष को पहुँच जाएँगे तो प्रियतम के मिलन की खुशी सदी के अन्त में प्रकट होगी । अर्थात ख़ुदा तआला की दया-दृष्टि ।

چوں زمستان بے چمن بگذشت　　شمسِ خوش بہارے بینم

अर्थात् चमन से पतझड़ गुज़र जाने का तात्पर्य यह है कि जब तेरहवीं सदी हिजरी का पतझड़ गुज़र जाएगा तो चौदहवीं सदी हिजरी के सर पर बहार का सूरज निकलेगा अर्थात युग का सुधारक प्रकट होगा ।

دَورِ اوچوں شود تمام بکام　　پسرش یادگارے بینم

अर्थात् जब उसका ज़माना सफलतापूर्वक गुज़र जाएगा तो उसके आदर्श पर उसका लड़का यादगार रह जाएगा अर्थात मुक़द्दर यों है कि ख़ुदा तआला उसको एक सदाचारी लड़का देगा जो उसके आदर्शों पर होगा और उसी के रंग से रंगीन हो जाएगा और वह उसके बाद उसका यादगार होगा । यह वस्तुत: इस विनीत की उस भविष्यवाणी के अनुसार है जो एक लड़के के बारे में की गई है ।

بندگانِ جنابِ حضرتِ او　　سربسر تاجدارے بینم

अर्थात यह भी मुक़द्दर है कि अन्ततः बड़े-बड़े लोग और बादशाह उसके विशेष श्रद्धालु हो जाएँगे और उससे श्रद्धा पैदा करना कतिपय लोगों के लिए सांसारिक समृद्धि और बादशाही का कारण होगा । यह उस भविष्यवाणी के अनुसार है जो इस विनीत को ख़ुदा तआला की ओर से मिली है क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस विनीत को संबोधित करके कहा कि मैं तुझ पर इतनी कृपा करूँगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूँढेंगे और एक जगह फरमाया कि तेरे मित्रों और प्यारों पर भी उपकार किया जाएगा ।

گلشنِ شرع راہمے بویم   گُلِ دیں رابارے بینم

अर्थात उससे शरीअत ताज़ा हो जाएगी और धर्म को फल लगेगें । यह उस इल्हाम के अनुसार है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 498 में लिखा है जिसका अनुवाद यह है कि हर एक धर्म पर इस विनीत के द्वारा इस्लाम धर्म विजयी किया जाएगा और फिर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 491 में यह इल्हाम है कि ख़ुदा तुझको असहाय नहीं छोड़ेगा जब तक कि दुष्ट और पवित्र में अन्तर करके न दिखाए।

تاچہل سال اے برادرِ من   دورِ آں شہسوارے بینم

अर्थात उस दिन से जब वह इमाम इल्हाम पाकर अपने आपको प्रकट करेगा, चालीस वर्ष तक ज़िन्दा रहेगा । अब स्पष्ट हो कि यह विनीत अपनी आयु के चालीसवें वर्ष में सच्चे धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए विशेष इल्हाम से नियुक्त किया गया और शुभ सूचना दी गई कि अस्सी वर्ष तक या उसके निकट तेरी आयु है । अतः इस इल्हाम से चालीस वर्ष तक प्रचार व प्रसार साबित होता है जिन में से पूरे दस वर्ष

बीत भी गए । देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ 238 । अल्लाह हर एक चीज़ पर समर्थ है । हालाँकि अब तक हज़रत नूह की तरह धर्म के प्रचार व प्रसार के लक्षण प्रकट नहीं लेकिन अपने समय पर तमाम् बातें पूरी होंगी ।

عاصیاں از امام معصوم   خجل و شرمسار مے بینم

इन अश्आर में इस बात की ओर संकेत है कि उस इमाम के जो चौदहवीं सदी हिजरी के सर पर आएगा विरोधी और अवज्ञाकारी लोग भी होंगे जिनके लिए अन्ततः रुसवाई और शर्मिन्दगी मुक़द्दर है इसी की ओर उस इल्हाम में संकेत है जो फ़ैसला आसमानी में छप चुका है और वह यह है कि मैं बहुत अधिक विजय दाता हूँ तुझे विजय दूँगा एक अदभुत मदद तू देखेगा अर्थात मुख़ालिफ़ लोग यह कहते हुए सज्दागाहों में गिरेंगे कि हे ख़ुदा ! हमें क्षमा कर कि हम पापी थे ।

یدِ بیضا کہ با او تابندہ   باز با ذوالفقار مے بینم

अर्थात उसका वह रौशन हाथ जो समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने की दृष्टि से तलवार की तरह चमकता है। फिर मैं उसको ज़ुल्फ़िक़ार के साथ देखता हूँ अर्थात एक युग ज़ुल्फ़िक़ार[1] का तो वह बीत गया कि जब ज़ुल्फ़िक़ार, अली कर्रमल्लाहो वज्हहू के हाथ में थी परन्तु ख़ुदा तआला फिर ज़ुल्फ़िक़ार उस इमाम को दे देगा, इस तरह पर कि उसका चमकने वाला हाथ वह काम करेगा जो पहले ज़माने में ज़ुल्फ़िक़ार करती थी । इसलिए वह हाथ ऐसा होगा कि मानो वह ज़ुल्फ़िक़ार-ए-अली कर्रमल्लाहो वज्हहू है जो फिर प्रकट हो गई है । यह इस बात की ओर संकेत है कि वह इमाम

[1] हज़रत अली रज़ि. की तलवार का नाम है । (अनुवादक)

सुल्तानुलक़लम (क़लम का बादशाह) होगा और उसकी क़लम ज़ुल्फ़िक़ार का काम देगी । यह भविष्यवाणी ठीक इस विनीत के उस इल्हाम का अनुवाद है जो अब से दस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में छप चुका है और वह यह है किताबुलवली ज़ुल्फ़िक़ार-ए-अली अर्थात इस वली की किताब ज़ुल्फ़िक़ार अली की है यह इस विनीत की ओर इशारा है । इसी आधार पर बार-बार इस विनीत का नाम कश्फ़ों में ग़ाज़ी (धर्मयोद्धा) रखा गया है । अत: बराहीन अहमदिया के कुछ अन्य स्थानों में इसी की ओर संकेत है ।

غازئ دوست دار دشمن کش ہمدم و یارِ غار مے بینم

वह ख़ुदा तआला की ओर से एक ग़ाज़ी (धर्म योद्धा) है अर्थात मित्रों को बचाने वाला और शत्रुओं को मारने वाला ।

صورت و سیرتش چو پیغمبر علم و حلمش شعار مے بینم

उसका अन्दर और बाहर (अर्थात स्वभाव और आचरण - अनुवादक) नबी की तरह है और नुबुव्वत की शान उसमें दिखाई देती है ज्ञान और गम्भीरता उसकी पहचान है । तात्पर्य यह कि अपने नबी करीम के अनुसरण के कारण मानो वही रूप और वही चरित्र उसको मिल गया है । यह उस इल्हाम के अनुसार है जो इस विनीत के बारे में बराहीन अहमदिया में छप चुका है । और वह यह है कि :-

جَرِیُّ اللّٰہِ فِیْ حُلَلِ الْاَنْبِیَاءِ

अर्थात ख़ुदा का योद्धा अवतारों के लिबास में ।

زینتِ شرع و رونقِ اسلام محکم و استوار مے بینم

अर्थात उसके आने से शरीअत सुसज्जित हो जाएगी और इस्लाम सुशोभित और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का लाया हुआ धर्म दृढ़ और मज़बूत हो जाएगा । यह उस इल्हाम के अनुसार है जो इस विनीत के सन्दर्भ में इस समय से दस वर्ष पहले बराहीन अहमदिया में छप चुका है और वह यह है :-

بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں برمنار بلندتر محکم افتاد

अनुवाद - अब प्रकट हो और निकल कि तेरा समय निकट आ गया और अब वह समय आ रहा है कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुयायी गढ़े में से निकाल लिए जाएंगे और एक ऊँचे और मज़बूत मीनार पर उनका क़दम पड़ेगा - हज़रत मसीह मौऊद । (नुज़ूल मसीह, पृ. 133)

और यह इल्हाम भी हुआ :-

هُوَ الَّذِيْ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ

(देखो पृष्ठ 239, बराहीन अहमदिया हाशिया)

(अर्थात् वही ख़ुदा है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे धर्म के साथ भेजा ताकि उसे समस्त धर्मों पर विजयी करे - अनुवादक ।

ا۔ح۔م و دال مے خوانم   نامِ آں نامدار مے بینم

अर्थात् कश्फ़ी तौर पर मुझे ज्ञात हुआ है कि उस इमाम का नाम अहमद होगा ।

دین و دُنیا ازو شود معمور   خلق زوبختیارمے بینم

अर्थात उसके आने से इस्लाम के दिन फिरेंगे और धर्म

उन्नति करेगा और दुनिया भी । यह इस बात की ओर संकेत है कि जो लोग दिलोजान से उसके साथ हो जाएँगे ख़ुदा तआला उनके गुनाह माफ़ कर देगा और धर्म के प्रति दृढ़ता प्रदान करेगा और वही इस्लाम की सांसारिक उन्नति का भी पौधा ठहरेंगे ख़ुदा उनको उन्नति देगा और उनमें और उनकी संतान में बरकत डालेगा यहाँ तक कि दुनिया में भी वे समृद्धिशाली क़ौम हो जाएंगे । जैसा कि बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम लिखा हुआ है :-

وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ[1]

और यह जो संकेत है कि उसके आने से इस्लाम की धार्मिक व सांसारिक हालत अच्छी हो जाएगी उसकी मूल वास्तविकता यह है कि जो ख़ुदा तआला की ओर से आता है वह इस्लाम के लिए रहमत बन कर आता है और उसी के साथ या जल्द या देर से ख़ुदा की रहमत उतरती है परन्तु शुरू में अकाल और महामारी इत्यादि की चेतावनियाँ भी उतरा करती हैं और कश्फ़ वाले परिणाम का हाल बयान करते हैं न कि प्रारंभिक घटनाओं का ।

بادشاہِ تمام ہفت اقلیم شاہِ عالی تبار مے بینم

अर्थात मुझको कश्फ़ की दृष्टि से वह एक कुलीनतम् बादशाह और सातों महाद्वीप का सम्राट नज़र आता है । यह उस भविष्यवाणी के अनुसार है जो इज़ाला औहाम में लिखी जा चुकी है और वह यह है :-

حكم الله الرّحمن لخليفة الله السّلطان سيؤتى له الملك العظيم ....الخ

[1] अनुवाद - तेरे अनुयायियों को उन पर जो इन्कारी हैं क़यामत तक विजय प्रदान करूँगा - अनुवादक ।

यह इस विनीत के बारे में इल्हाम है जिसका यह अर्थ है कि वह अल्लाह का ख़लीफ़ा बादशाह होगा जिसको एक बहुत बड़ा साम्राज्य दिया जाएगा और जिस पर ज़मीन के ख़ज़ाने खोले जाएँगे इस बादशाही से तात्पर्य इस संसार की ज़ाहिरी बादशाही नहीं बल्कि आध्यात्मिक बादशाही है ।[1]

مہدیؔ وقت و عیسیٰ دَوران　　ہر دو را شہسوار مے بینم

अर्थात् वह महदी भी होगा और ईसा भी, दोनों गुणों से सुसज्जित होगा और दोनों गुणों से अपने आप को प्रकट करेगा । यह अन्तिम शे'र अदभुत विवरण पर आधारित है जिस से स्पष्ट तौर पर समझा जाता है कि वह ख़ुदा तआला की ओर से आदेश पाकर ईसा होने का भी दावा करेगा और स्पष्ट है कि यह दावा तेरह सौ वर्षों से आज तक इस विनीत के अतिरिक्त किसी ने नहीं किया कि कथित ईसा मैं हूँ ।

यह कुछ अश्आर हैं जो हमने ने'मतुल्लाह वली के लम्बे चौड़े कसीदे से संक्षिप्त तौर पर लिखे हैं । हर एक को चाहिए कि अपनी तसल्ली के लिए मूल कसीदों को देख ले । وَالسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى (सलामती हो उस पर जिसने हिदायत का अनुसरण किया - अनुवादक) ।

[1] हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में भी पहली किताबों में यह भविष्यवाणी थी कि वह बादशाह होगा और उसके साथ लश्कर होगा लेकिन अन्ततः मसीह दीन दु:खियों और दरिद्रों के वेश में प्रकट हुआ और यहूदियों ने ज़ाहिरी निशानों के न पाए जाने के कारण अस्वीकार कर दिया ।

हमारे नबी हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी

ज्ञात होना चाहिए कि यद्यपि सामान्य तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ओर से यह हदीस पूर्णत: सत्य साबित हो चुकी है कि ख़ुदा तआला इस उम्मत के सुधार के लिए हर एक शताब्दी में ऐसा सुधारक पैदा करता रहेगा जो उसके धर्म को नया (ताज़ा) करेगा लेकिन चौदहवीं सदी के लिए अर्थात इस शुभ सूचना के बारे में कि एक ऊँचे मर्तबे वाला महदी चौदहवीं सदी के सर पर प्रकट होगा, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इतनी हदीसें पायी जाती हैं कि कोई सत्याभिलाषी उनसे इन्कार नहीं कर सकता । हाँ इसके साथ यह भी लिखा है कि जब वह प्रकट होगा तो उलमा उसके कुफ्र का फ़त्वा देंगे और निकट है कि उसको क़त्ल कर दें । अत: मौलवी सिद्दीक़ हसन साहिब भी हुजजुल किरामा के पृष्ठ 363 और 384 में कहते हैं कि तत्कालीन उलमा जो कि मूर्ख मौलवियों और सज्जाद: नशीनों की पैरवी के आदी हैं उस महदी की शिक्षाओं को सुनकर यों कहेंगे कि यह तो इस्लाम धर्म की जड़ें उखाड़ रहा है और उसकी मुख़ालिफ़त के लिए उठ खड़े होंगे और अपनी पुरानी आदत के अनुसार उसका नाम काफ़िर, पथभ्रष्ट, दज्जाल और गुमराह रखेंगे परन्तु तलवार के रौब से डरेंगे और मौलवियों से अधिक उसका कोई दुश्मन नहीं होगा क्योंकि उसके प्रादुर्भाव से उनकी प्रतिष्ठाओं और सरदारियों में कमी आ जाएगी और यदि तलवार

न होती तो उसके लिए क़त्ल का फ़त्वा देते और यदि उसको मानेंगे भी तो दिल में उसका द्वेष रखेंगे । उसका अनुसरण जिस तरह साधारण लोग करेंगे विशेष लोग नहीं करेंगे। ज्ञानी लोग जो प्रत्यक्षदर्शी और आध्यात्मज्ञानी हैं उसके अनुयायियों में शामिल हो जाएँगे ।

इस बयान में सिद्दीक़ हसन साहिब ने तलवार के उल्टे अर्थ समझे हैं बल्कि तात्पर्य यह है कि अगर गवर्नमेन्ट की तलवार से डर न होता तो उसको क़त्ल कर डालते । तलवार को महदी की ओर मंसूब करना हदीस के वास्तविक अर्थों में परिवर्तन है । अगर उस महदी के हाथ में तलवार होती तो फिर कैसे ये डरपोक और दुनिया के मुर्दाखोर उलमा उसको धिक्कृत और क़ाफिर और दज्जाल कह सकते । काफ़िरों की तो सौ-सौ खुशामद करके अपना धर्म बर्बाद कर लें, लेकिन यह नामर्द गिरोह तलवार की चमक देखकर एक मोमिन को कैसे काफिर और दज्जाल कह सकें । इस जगह सिद्दीक़ हसन साहिब अपनी ओर से यह बढ़ा गए हैं कि उस आने वाले कथित इमाम का इन्कार करने वाले और कुफ्र का फ़त्वा देने वाले हनफ़ी और उसके अतिरिक्त अहले हदीस सम्प्रदाय के लोग होंगे हम लोग नहीं होंगे, हालाँकि यही एकेश्वरवाद के दावेदार कुफ्र का फ़त्वा लगाने में प्रमुख हैं और अहले हदीस उनका अनुसरण करते हैं । सिद्दीक़ हसन साहिब की यह बड़ी ग़लतफ़हमी है कि उस कथित इमाम से अभिप्राय मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह, महदी हैं क्योंकि वह तो उनके कथनानुसार तलवार और भाले वाले खूनी महदी हैं और इसके अतिरिक्त उनके लिए इन धर्माचार्यों के कथनानुसार आसमान से आवाज़ आएगी और बड़े-बड़े चमत्कार उनसे प्रकट होंगे और हज़रत मसीह आसमान से उतर कर उसके अनुयायियों में शामिल होंगे और कुफ्र का

फ़त्वा देने वालों की सज़ा के लिए उनके पास तलवार होगी । फिर मौलवियों की चाहे वे एकेश्वरवादी हों या मुक़ल्लिद,[1] क्या हिम्मत है कि उनको पथभ्रष्ट और बेईमान और काफ़िर और दज्जाल कह सकें । यह भविष्यवाणी तो इस ग़रीब महदी के लिए है जिसकी बादशाही इस दुनिया की बादशाही नहीं और जिसको तलवारों से कुछ मतलब नहीं । सिद्दीक़ हसन खान साहिब के कथनानुसार ख़ूनी महदी जब छोटी-छोटी कुरीतियों पर लोगों को क़त्ल कर देगा तो फिर मौलवी उसको काफ़िर और दज्जाल और बेईमान कहकर और उसके बारे में कुफ्र के फ़त्वे लिखकर कैसे उसके हाथ से बचेंगे और क्या उन मौलवियों की हिम्मत है कि एक ताक़तवर बादशाह को जिसकी तलवार से ख़ून हो चुके हों काफ़िर और दज्जाल कह सकें और उसके बारे में फ़त्वा लिख सकें । असल बात यह है कि हदीसों में कई प्रकार के महदियों की तरफ़ इशारा है और मौलवियों ने तमाम् हदीसों को एक ही जगह मिश्रित करके फ़साद डाल दिया है और रिवायतों में मिलौनी ज्ञान की कमी के कारण भी इन पर यह बात संदिग्ध हो गई अन्यथा चौदहवीं सदी हिजरी का महदी जिसका नाम सुल्तानुलमशरिक़ (अर्थात पूरब का बादशाह - अनुवादक) भी है विशेषता के साथ हदीसों में बयान किया गया है । जिसके जिहाद रूहानी जिहाद हैं जो दज्जालियत के पूर्णतः फैलने के कारण ईसा के गुणों पर अवतरित हुआ है । हुजजुल किरामा के पृष्ठ 387 में लिखा गया है कि हाफ़िज़ **इब्नुलक़य्यिम** मनार में लिखते हैं कि महदी के बारे में चार प्रकार के कथन हैं । उनमें से एक यह कथन है कि महदी मसीह इब्ने मरयम है । मैं कहता हूँ कि जब प्रमाणों से पूर्णतः साबित हो गया कि असल मसीह ईसा

[1] हदीस के चारों इमामों में से किसी को भी मानने वाले, अहले हदीस ।

इब्ने मरयम मृत्यु पा गया है और कथित तौर पर आने वाला मसीह मौऊद उसका प्रतिबिम्ब है और उसका सदृश है जो दज्जालियत के फैलने के कारण इस नाम पर **प्रकट हुआ** । तो फिर हर एक व्यक्ति समझ सकता है कि वह अपने युग का महदी भी है और ईसा भी क्योंकि जब हर एक सन्मार्गप्राप्त सदाचारी को महदी कह सकते हैं तो क्या वह व्यक्ति जिसने पूर्ण शुद्धि की बरकत से मात्र रूह का स्थान पाकर ईसा और रूहुल्लाह का नाम पा लिया है वह महदी के नाम से नामित नहीं हो सकता ? मुझे बहुत आश्चर्य है कि हमारे उलमा ईसा के नाम से क्यों चिढ़ते हैं इस्लाम की किताबों में तो ऐसी चीज़ों का नाम भी ईसा रखा गया है जो अत्यन्त घृणित हैं । अतः **बुरहान कातिअ** में ऐन शब्द की सूची में लिखा है कि **ईसा दह्क़ान** जिस से तात्पर्य अंगूरी शराब है और **ईसा नौमाहः** अंगूर के उस गुच्छे का नाम है जिससे शराब बनाई जाय और अंगूरी शराब को भी **ईसा नौमाहः** कहते हैं ।

अब आश्चर्य की बात है कि मौलवी लोग शराब का नाम तो ईसा रखें और किताबों में बेधड़क उसका वर्णन करें और एक गन्दी चीज़ की एक पवित्र व्यक्ति के साथ नाम की साझेदारी उचित ठहराएं और जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला अपनी विशेष सामर्थ्य और कृपा से वर्तमान दज्जालियत के मुक़ाबले पर ईसा के नाम से नामित करे वह उनकी दृष्टि में काफ़िर हो ।

(मियाँ गुलाब शाह मज्ज़ूब की भविष्यवाणी, जिसे मियाँ करीम बख़्श ने सौगन्ध खाकर बयान किया है, लिखी जाती है)

करीम बख़्श जमालपुरी की ओर से ख़ुदा के नाम पर हमदर्दी के उद्देश्य से मुसलमानों की आगाही के लिए एक सच्ची गवाही का

प्रकटन

समस्त मुसलमान भाइयों पर स्पष्ट हो कि इस समय मैं केवल अपने भाइयों की भलाई और हमदर्दी के लिए उस अपनी सच्ची गवाही को जिसका वर्णन मैंने किताब इज़ाला औहाम के पृष्ठ 707 में इससे पहले लिखाया था, पूरे विस्तार से मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के बारे में बयान करना चाहता हूँ ताकि विशेष तौर पर लोगों को मेरी ओर से सूचना हो जाए और गवाही देने के कर्तव्य से मुझको निवृत्ति मिले । इससे पहले कि मैं उस गवाही को बयान करूँ अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूँ कि वह मेरी गवाही पूरी तरह सत्य और हर एक शंका और सन्देह से पूर्णतः पवित्र है । अगर इस गवाही के वर्णन करने में जिसे मैं नीचे वर्णन करूँगा कुछ मेरी ओर से बनावट या झूठ है या कुछ कम ज़्यादा मैंने उसमें कर दिया है तो ख़ुदा तआला इसी दुनिया में मुझ पर प्रकोप डाले । मैं अच्छी तरह समझता हूँ कि अगर मैं घटना के विपरीत वर्णन करूँगा और ख़ुदा तआला के प्रति झूठ बोलूँगा तो नर्क में जाने वाले अगुवाओं में शामिल किया जाऊँगा और ख़ुदा तआला का प्रकोप और उसकी धिक्कार लोक और परलोक में मुझ पर पड़ेगी । मैंने इस गवाही को जो अभी बयान करूँगा बड़ी दृढ़ता से याद रखा है और न मैंने बल्कि ख़ुदा तआला ने

याद रखने में मुझको सहायता दी है ताकि एक गवाही जो मेरे पास थी अपने समय पर अदा हो जाए यद्यपि मैं पहले से खूब जानता हूँ कि इस गवाही के देने से मैं अपनी प्रिय क़ौम को बहुत नाराज़ करूँगा और वह कुफ्र जो उलमा के कार्यालयों से वितरित किया जा रहा है उसका एक बड़ा भाग मुझको भी मिलेगा और अपने भाइयों की मुलाक़ात से पृथक किया जाऊँगा और गाली-गलौज, और लान-तान का निशाना बनूँगा लेकिन इसके साथ मुझे इस बात पर भी पूर्ण विश्वास है कि अगर इस धार्मिक गवाही को इस घोर उपद्रव के समय में गुप्त रखूँगा तो अपने ख़ुदा को नाराज़ कर दूँगा और बहुत बड़ा पापी हो जाऊँगा और उस जलती हुई आग में डाला जाऊँगा जिसकी कोई सीमा नहीं । अतएव मैंने दोनों प्रकार के नुकसानों को जाँचा । अन्ततः यह नुकसान मुझको हल्का और तुच्छ ज्ञात हुआ कि मेरी सच्ची गवाही के कारण मेरी बिरादरी के सम्मानित लोग मुझको छोड़ देंगे या मैं मौलवियों के फत्वों में काफ़िर-काफ़िर करके लिखा जाऊँगा । अब मैं बूढ़ा हूँ और मौत के निकट । बड़ा दुर्भाग्य होगा कि इस आयु तक पहुँचकर मैं अल्लाह को छोड़कर दूसरों से डरूँ । मुझको उस कुफ्र और पाप से डर लगता है जो ख़ुदा तआला की दृष्टि में है और मैं नर्क की आग की किसी तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता । फिर मैं क्यों चार दिन की ज़िन्दगी के लिए मौलवियों या बिरादरी की ख़ातिर क़ियामत के दिन अपना मुँह काला करूँ । ख़ुदा तआला मुझे ईमान पर मौत दे । मैं कभी झूठ नहीं बोलूँगा । अगर वह प्रसन्न हो तो फिर दुनिया की हर एक रुसवाई निःसन्देह एक प्रतिष्ठा है और हर एक दर्द एक आनन्द । भाइयों की जुदाई से भी अपने अल्लाह की राह में मुझे डर नहीं, मेरी अब आख़िरी आयु है । बहुत से रिश्तेदारों को

मौत ने मुझसे जुदा कर दिया और मैं भी जल्द इस मुसाफ़िरख़ाना से सफर करके शेष बचे हुए प्रियजनों से जुदा होने वाला हूँ । फिर अगर ख़ुदा तआला के लिए और उसकी राह में और उसको प्रसन्न करने के लिए जुदाई हो तो **क्या ही सौभाग्य** है कि ऐसा प्रतिफल मुझको मिले । भाइयो ! नि:सन्देह जानो कि अगर यह गवाही मेरे पास न होती और इस समय से तीस या इकत्तीस वर्ष पहले अगर एक ख़ुदा में आसक्त व्यक्ति मेरे पास यह रहस्य न खोलता कि **आने वाला कथित ईसा** कौन है तो आज मैं भी अपने भाइयों की तरह मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी का एक कट्टर विरोधी होता । चाहे मैं क़त्ल भी किया जाता फिर भी असंभव था कि मैं मिर्ज़ा साहब को मसीह मौऊद मानकर अपने उस पुख़्ता अक़ीदा को छोड़ देता जिसको मैं अपने विचार में अहले सुन्नत वल् जमाअत का मज़हब और सदाचारी पूर्वजों का विश्वास और अपने उलमा का सर्वमान्य अक़ीदा समझता था लेकिन यह ख़ुदा तआला की मेरे लिए एक रहमत थी जो उसने इस घटना से तीस वर्ष पहले एक धर्मात्मा और निर्जन स्थान में फिरने वाले एक ख़ुदा में आसक्त के मुँह से वे बातें मेरे कानों तक पहुँचायी जो अब मेरे लिए एक महान निशान हो गयीं और उन भविष्यवाणियों ने मेरे दिल को मिर्ज़ा साहब की सच्चाई पर ऐसा क़ायम कर दिया कि अगर अब कोई टुकड़े-टुकड़े भी करे तो मुझे इस राह में अपनी जान की भी कुछ परवाह नहीं। जैसे जब दिन निकलता है तो किसी को उसमें कुछ सन्देह नहीं रहता, उसी तरह मुझ पर साबित हो गया है कि मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी **वही मसीह मौऊद** हैं जिनके आने का वादा था, जिनका किताबों में ईसा नाम रखा गया है। मेरा दिल इस विश्वास से भरा हुआ है कि ईसा नबी

अलैहिस्सलाम मृत्यु पा गए और पुनः नहीं आएँगे। जिसके आने की **रसूले करीम** सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने शुभ सूचना दी थी वह यही इमाम है जो इसी उम्मत में से पैदा हुआ। इसलिए मैंने चाहा कि इस सच्चाई को दूसरों पर भी स्पष्ट कर दूँ और अज्ञान लोगों को सच पर क़ायम करने के लिए सहायता करूँ । ख़ुदा मेरे दिल को देख रहा है कि मैं सच्चा हूँ और अगर मैं सच्चा नहीं तो ख़ुदा मुझ पर तबाही डाले । अतः हे भाइयो ! डरो और अकारण बदगुमानी से अपने भाई की गवाही रद्द मत करो, कि वह दिन हम सब के लिए निकट है जिससे हम किसी ओर भाग नहीं सकते । वह गवाही जो मेरे पास है यह है कि मेरे गाँव जमालपुर में जो ज़िला लुधियाना में स्थित है ख़ुदा में लीन एक धर्मात्मा पुरुष थे जिनका नाम गुलाब शाह था । मैं उनकी संगति में अधिकतर रहता और उनसे लाभान्वित होता रहता था हालाँकि मैं मुसलमानों के घर में पैदा हुआ था इसलिए मुसलमान कहलाता था, परन्तु मैं इस बात को प्रकट किए बिना नहीं रह सकता कि वास्तव में उन्होंने मुझे इस्लाम की राह सिखलाई और ऐकेश्वरवाद के स्वच्छ तथा पवित्र मार्ग पर मुझे मज़बूती से क़ायम किया । उस महान फ़क़ीर ने एक बार मुझसे बयान किया कि ईसा जवान हो गया है और लुधियाना में आएगा और क़ुरआन की ग़लतियाँ दूर करेगा और निर्णय क़ुरआन के द्वारा करेगा, पुनः फिर फरमाया कि निर्णय क़ुरआन पर करेगा और मौलवी इन्कार करेंगे। पुनः फिर कहा कि मौलवी लोग अत्यधिक इन्कार करेंगे । मैंने उनसे पूछा कि क़ुर्आन तो ख़ुदा तआला की वाणी है क्या उसमें भी गलतियाँ हैं ? उन्होंने जवाब दिया कि व्याख्याओं पर व्याख्याएँ लिखी गईं और शायरी भाषा फैल गई इसलिए गलतियाँ भर गईं । (अर्थात्

अतिशयोक्ति पर अतिशयोक्ति करके वास्तविकताओं को छुपाया गया जैसे शायर छुपाते हैं) ईसा जब आएगा तो इन सब ग़लतियों को निकालेगा और निर्णय क़ुर्आन से करेगा पुनः कहा कि निर्णय क़ुरआन पर करेगा । इस पर मैंने कहा कि मौलवी तो क़ुर्आन के वारिस (उत्तराधिकारी) हैं वे क्यों इन्कार करेंगे ? तब उन्होंने जवाब दिया कि मौलवी अत्यधिक इन्कार करेंगे, फिर मैंने बात को दोहराया और पूछा कि मौलवी क्यों इन्कार करेंगे ? वे तो क़ुरआन के वारिस हैं । इस पर वह बड़े क्रोध में आकर और नाराज़ होकर बोले कि तू देखेगा कि उस समय मौलवियों का क्या हाल होगा, वे अत्यधिक इन्कार करेंगे। फिर मैंने उनसे पूछा कि ईसा जवान तो हो गया लेकिन वह कहाँ है ? उन्होंने कहा कि बीच क़ादियान के (अर्थात क़ादियान में) तब मैंने कहा कि क़ादियान तो लुधियाना से तीन कोस की दूरी पर है उस जगह ईसा कहाँ है ? उस समय उन्होंने उसका कुछ जवाब न दिया, लेकिन दूसरे समय में उन्होंने इस बात का जवाब दे दिया जिसको अधिक समय बीत जाने के कारण मैं पहले लिखा न सका अब याद आया कि अन्त में कई बार उन्होंने कहा कि वह क़ादियान बटाला के पास है उस जगह ईसा है और जब उन्होंने यह कहा था कि ईसा क़ादियान में है और अब जवान हो गया तो मैंने इन्कार करते हुए उनको कहा कि ईसा पुत्र मरयम तो आसमान पर ज़िन्दा मौजूद है और काबा शरीफ पर उतरेगा । यह कौन ईसा है जो क़ादियान में है और जवान हो गया ? इसके जवाब में वह बड़ी विनम्रता और प्यार से बोले और कहा कि वह ईसा पुत्र मरयम जो नबी था, मृत्यु पा गया है वह पुनः नहीं आएगा और मैंने बड़ी तहक़ीक़ की है कि ईसा पुत्र मरयम मृत्यु पा गया है वह पुनः नहीं आएगा । अल्लाह ने

मुझे बादशाह कहा है, मैं सच कहता हूँ झूठ नहीं कहता । फिर उन्होंने तीन बार अपनी तरफ से कहा कि वह ईसा जो आने वाला है उसका नाम **गुलाम अहमद** है । यद्यपि मैंने गुलाब शाह की बहुत सी भविष्यवाणियाँ पूरी होती देखी थीं लेकिन इस भविष्यवाणी के सन्दर्भ में कि आने वाला ईसा क़ादियान में है और उसका नाम गुलाम अहमद है, हमेशा मैं गुलाब शाह का विरोधी ही रहा जब तक कि उसको पूरे होते देख न लिया हालाँकि मैं उनको महापुरुष और ख़ुदा में लीन मानता था लेकिन मैं इस भविष्यवाणी को किसी तरह स्वीकार नहीं कर सकता था क्योंकि वह मेरे विचारानुसार अहले सुन्नत वल् जमाअत के अक़ीदे के विरुद्ध थी । इसलिए पहले दिन जब मैंने उनके मुँह से यह बात सुनी तो बड़े ज़ोर शोर से मैंने उनका जवाब दिया लेकिन फिर मैंने शिष्टाचार की दृष्टि से ज़ाहिरी तकरार छोड़ दिया और दिल ही दिल विरोधी रहा क्योंकि दूसरे भाइयों की तरह पूरी दृढ़ता से मेरा यह विश्वास था कि ईसा आसमान से उतरेगा और ज़िन्दा आसमान पर बैठा है, मरा नहीं है । उन्होंने मुझे यह भी कहा था कि जब ईसा लुधियाना में आएगा तो एक भयानक अकाल पड़ेगा जैसा कि मैंने स्वयं अपनी आँखों से देख लिया कि जब इस दावा के बाद मिर्ज़ा साहिब लुधियाना में आए तो वास्तव भयानक अकाल लुधियाना में पड़ा । अतः इस सिद्धपुरुष ने लगभग तीस या इकत्तीस वर्ष पहले मुझको वे दिए समाचार जो आज प्रकट हुए और मैंने अपनी आँखों से देख लिया कि वे सब बातें पूरी हो गईं जो गुलाब शाह ने आज से तीस या इकत्तीस वर्ष पहले मुझको बताई थीं ।

मैं इस बात का लिखना भी ज़रूरी समझता हूँ कि मैं बार-बार इस बात को देख चुका हूँ कि यह सिद्धपुरुष

चमत्कारी और करामाती था । मैंने अपनी आँखों से स्वयं देखा है कि एक बार एक जंगल में रामपुर गांव के पास उन्होंने एक निशान लगाया कि इस जगह दरिया चलेगा और दरिया चलने की कोई जगह न थी इसलिए हमने इन्कार किया लेकिन काफी समय बीतने के बाद उसी जगह से नहर निकली जहाँ निशान लगाया था ।

एक जगह राजगीर लोग एक कुआँ बना रहे थे लगभग तैयार हो चुका था कुछ थोड़ा शेष था गुलाब शाह की उस पर नज़र पड़ी और कहा व्यर्थ इस कुएँ को बनाते हो यह तो पूरा नहीं होगा। देखने में उनकी यह बात बुद्धि के विपरीत थी क्योंकि कुआँ तो बन चुका था कुछ थोड़ा सा शेष था परन्तु उनका कहना सच हो गया कि उसी मध्य वह कुआँ नीचे बैठ गया और उसका नामो निशान न रहा ।

एक बार उन्होंने अली बख़्श नामक एक व्यक्ति को बुलाया कि कमरे की छत से जहाँ वह बैठा था दूसरी तरफ़ चला आ, और अलीबख़्श उस कमरे की छत से हटने में सुस्ती करता था । अन्ततः उन्होंने झिड़क कर उसको कमरे की छत से उठाया । अतः जब अली बख़्श कमरे की छत से अलग हुआ तो उसी समय अचानक कमरा गिर गया ।

एक बार मुझसे पूछने लगे कि क्या तेरे पिता का एक दाँत भी टूटा हुआ था, मैंने कहा कि हाँ । तब उन्होंने कहा कि वह स्वर्ग में चला गया । मेरे पिता बहुत पहले मृत्यु पा चुके थे और उनको उसके दाँत के बारे में कुछ जानकारी नहीं थी क्योंकि वह उस ज़माने के बाद हमारे गाँव में आए थे । अतः दाँत टूटने की सूचना उन्होंने इल्हाम की दृष्टि से दी और कश्फ़ से उनके स्वर्ग में जाने की मुझे शुभ सूचना दी । यह भी वर्णनयोग्य है कि ग़ुलाब शाह एक ख़ुदा को मानने वाला

और सच्चे धर्म का अनुयायी एवं सिद्धपुरुष था और ख़ुदा में लीन होने की हालत में एकेश्वरवाद का झरना उनके मुँह से बहता था । मैं ने इस्लाम की राह और एकेश्वरवाद पर चलने का तरीक़ा उन्हीं से सीखा और उन्हीं की शिक्षा के अनुसार ख़ुदा का जप-तप करता रहा । यहाँ तक कि थोड़े दिनों में असलियत खुल गई और इबादत में आनन्द आने लगा और ऐसा हो गया कि जैसे एक मुर्दा ज़िन्दा हो जाता है और सच्चे स्वप्न आने लगे, जो स्वप्न देखता वह पूरा हो जाता और सच्चे इल्हाम मुझको होने लगे । यह सब कुछ उनके ध्यान दिलाने का उपकार था । वह बार-बार कहा करते थे कि हर एक भलाई अल्लाह और रसूल के बताए हुए मार्ग पर चलने में हैं । चार मार्ग और चार फ़िर्क़े जो लोगों ने बना रखे हैं मूलतः उनको कुछ चीज़ नहीं समझना चाहिए, हमेशा और हर हाल में अपना उद्देश्य यह रखना चाहिए कि सच्चे तौर पर अल्लाह और रसूल का अनुसरण हो जाए । जो बात अल्लाह और रसूल से साबित न हो वह सही नहीं है चाहे उसका कोई क़ाइल भी हो, और कहा करते थे कि जैसे एक शिष्य कहे कि मैं अपने ही गुरू का कहा मानूँगा न कि किसी और का । यही चार सम्प्रदाय के उन अनुयायियों की मिसाल है जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अनुसरण की अपेक्षा अपने हदीस के इमामों की अनुसरण को प्रमुखता देते हैं । शुद्ध सत्य पर वे लोग हैं जो क़ुरआन और हदीस पर ध्यान देते हैं और क़ुरआन से सच्चाई को ढूँढते हैं और फिर उस पर कार्यरत होते हैं । चार सम्प्रदायों का अकारण क़ुरआन का मुख़ालिफ बनकर भी अनुयायी बन जाना या चार सम्प्रदायों में ही ख़ुदा तआला की भलाइयों को सीमित समझना धर्मनिष्ठों का काम नहीं, यह धर्म नहीं है बल्कि अपने मन की बातें हैं । धर्म

वही है जो क़ुरआन लाया और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सिखलाया । मैंने उनसे एक बार कहा कि आप का मुरीद बनना चाहता हूँ आज्ञा दें ताकि मिठाई लाऊँ । इस पर उन्होंने कहा कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा किराम से मिठाई मंगवाया करते थे । हर एक ने'मत प्रेम से प्राप्त होती है । ख़ुदा में लीन होने की अवस्था में वह अधिकतर कहा करते थे कि मुईनुद्दीन चिश्ती और क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी दरवेश (सिद्धपुरुष) थे और मैं बादशाह हूँ । अमीरों से बहुत नफ़रत रखते और ग़रीबों से मुहब्बत और प्यार का व्यवहार करते । उन्होंने रहने के लिए कोई मकान नहीं बनाया था, स्वच्छन्द स्वभाव के थे जहाँ चाहते रहते और बीमारों का इलाज करते और किसी से कभी भी कुछ न मांगते और ख़ुदा की मुहब्बत से परिपूर्ण थे ।

इनकी संगति के प्रभाव से जो मुझे ने'मतें प्राप्त हुईं उनमें से एक बड़ी ने'मत मैं यह समझता हूँ कि इस समय जो बड़े-बड़े विद्वान ठोकर खाकर मुँह के बल गिर पड़े, मुझको ख़ुदा तआला ने मिर्ज़ा साहब के बारे में ठोकर खाने से बचा लिया । यह दृढ़ता मेरी अपनी ताक़त से नहीं पैदा हुई बल्कि यह उस भविष्यवाणी का असर है जो इस ज़माने से एक मुद्दत पहले सुन चुका हूँ । उन्होंने मुझको कहा था कि तू देखेगा कि जब ईसा आयेगा उस समय मौलवियों का क्या हाल होगा । इस बात में उन्होंने मेरी लम्बी आयु की तरफ़ भी इशारा किया था जिससे यह तात्पर्य था कि तीस वर्ष तक तू जीवित रहेगा मैं उस समय जीवित नहीं रहूँगा मगर तू रहेगा । उनकी सत्संगति के असर से जितने मुझको नेक स्वप्न हुए उनको इस जगह मैं विस्तारपूर्वक लिख नहीं सकता । मैं अधिकतर मौलवियों से प्रेम और निष्कपटता के संबंध रखता और उन से हमदर्दी करता ।

एक बार कहने लगे कि इन मौलवियों का हाल भी देखा ? कुछ समय के पश्चात् स्वप्न में मुझको कुछ मौलवी दिखाई दिए जिनके कपड़े अत्यन्त मैले-कुचैले और शरीर बहुत दुबले थे और हालत नितान्त ख़राब थी और वे इसी शहर लुधियाना के थे जिनको मैं जानता हूँ जो अभी तक जीवित हैं और जिनकी संगति से वे मुझको मना करते थे बल्कि कहते थे कि उनकी संगति में रहो जिनके अच्छे हालात मुझ पर स्वप्न में दिखाई देते थे । अतः मौलवी मुहम्मद शाह साहिब पुत्र श्री मौलवी मुहम्मद हसन साहिब महान रईस लुधियाना के पास मेरा आना जाना बहुत था । वह एक बार मुझको स्वप्न में नज़र आए, देखता हूँ कि वह एक सभा में बैठे हैं उनका लिबास अत्यन्त सफेद है और बहुत अच्छा और खूबसूरत है और जितनी बड़ी उनकी सभा है उसके समस्त लोग सफेद कपड़े पहने हुए हैं । उस समय मेरे दिल में यह डाला गया कि मौलवी मुहम्मद शाह साहिब धर्म और शरीयत पर दृढ़ता से क़ायम हैं इसलिए यह लिबास दिखाई देता है । एक बार मैंने यह स्वप्न देखा कि कोई व्यक्ति मुझे कहता है कि तुझे सत्तर ईमान दिए गए हैं । यह स्वप्न मैंने मौलवी मुहम्मद शाह साहिब के सामने बयान किया तो उन्होंने कहा कि ईमान तो एक ही होता है परन्तु यह पूर्ण ईमान की ओर इशारा है और सत्तर की संख्या से ईमान की शक्ति और शुभ अन्त का प्रकट करना अभीष्ट है । अतः समस्त प्रशंसा खुदा के लिए है कि इस घोर अन्धकार के तूफान के समय मैंने सत्य को पहचान लिया और ख़ुदा तआला ने बचा लिया ।

मैं अच्छी प्रकार से जानता हूँ कि यह समस्त भलाइयाँ ग़ुलाब साहिब की संगति के असर से हैं । वह कहा करते थे कि अगर मेरी संगति में रहने से किसी को कुछ भी फ़ायदा न

हो तो यह फ़ायदा तो अवश्य होगा कि उसकी इबादत में मिठास और दुआ स्वीकार होने का असर पैदा होगा अर्थात ईमान के नष्ट होने से बच जाएगा । अतः ख़ुदा तआला ने इस फ़ित्ने के ज़माने में मुझे ठोकर से बचाए रखा और मिर्ज़ा साहब की सच्चाई पर मेरे दिल को क़ायम कर दिया ।

अन्ततः यह भी स्पष्ट रहे कि यद्यपि मैंने अल्लाह तआला की क़सम खाकर यह घोषणा-पत्र प्रकाशित किया है लेकिन जैसा कि मैं किताब इज़ाला औहाम में लिखवा चुका हूँ मेरे चाल-चलन से इस इलाक़े के बहुत से लोग परिचित हैं । वे अच्छी तरह से जानते हैं कि मेरी ज़िन्दगी कैसी नेकी और संयम से गुज़री है और हमेशा ख़ुदा तआला ने मुझको झूठ और लांछन के अपवित्र मार्गों से बचाए रखा है और लुधियाना के मुसलमानों के मुखिया हज़रत मौलवी मुहम्मद हसन साहिब जिनके दादा साहिब के समय से मैं उस परिवार के साथ प्रेम और श्रद्धा का संबंध रखता हूँ और सजातीय होने का सौभाग्य भी मुझको प्राप्त है वह मेरे हाल से अच्छी तरह परिचित हैं मतभेद होने के बावजूद फिर भी वह मेरे लिए क़ुरआन शरीफ़ उठाकर क़सम खा सकते हैं कि करीम बख़्श अर्थात यह विनीत हमेशा नेकनामी और धार्मिकता के साथ जीवन व्यतीत करता रहा है और झूठ और लांछन से जो दुश्चरित्र और नीच लोगों का काम है कभी उससे प्रकट नहीं हुआ । अगर मेरे आदरणीय मौलवी मुहम्मद शाह साहिब आज जीवित होते तो वह भी मेरी नेकी और संयम की गवाही देते । इसके अतिरिक्त एक बुद्धिमान सोच सकता है कि मुझे मिर्ज़ा साहब के बारे में अकारण झूठ बोलने और लांछन लगाने से ख़ुदा और लोगों की ओर से ला'नत के अतिरिक्त और क्या मिलता । इस्लाम के एक प्रतिष्ठित परिवार से मित्रता और बिरादरी का पुराना

संबंध है अर्थात मौलवी मुहम्मद हसन साहिब प्रमुख लुधियाना के परिवार से । अत: जिस दशा में मौलवी साहिब मिर्ज़ा साहब से किनारा कर गए और एक दुनिया उनको काफिर-काफिर कहने लगी तो मुझे क्या पड़ी थी कि मैं मिर्ज़ा साहिब की ओर आकृष्ट होकर अपना धर्म और सांसारिक जीवन भी बर्बाद करता और अपने प्रिय भाइयों को छोड़ता और अपनी क़ौम से भी अलग होता । इसलिए जिस चीज़ ने मुझे मिर्ज़ा साहब की ओर आकृष्ट किया और लोगों की लान-तान को मैंने अपने ऊपर गवारा कर लिया और अपने पुराने मान्य❶ को नाराज़ किया वह मिर्ज़ा साहब की सच्चाई है जो ग़ुलाब शाह की भविष्यवाणी से मुझ पर खुल गई ।

पुन: मैं कहता हूँ कि मेरे चाल-चलन के बारे में हज़रत मौलवी मुहम्मद हसन साहिब को क़सम देकर पूछना चाहिए । मेरे विचार के अनुसार वह पवित्र लोगों की सन्तान और कुलीन एवं सज्जन और विद्वानों एवं गुणवान पुरुषों की नस्ल हैं । वह मेरे हाल से परिचित और मैं उनकी पारिवारिक सज्जनता और कुलीनता से परिचित हूँ और उनके पिता के समय से मेरा उनसे मेल-मिलाप है । यह सब मैंने केवल अल्लाह के नाम पर लिखा है क्योंकि गुमराही की एक आग भड़क रही है अगर एक व्यक्ति भी मेरी इस गवाही से सन्मार्ग पा जाए तो यदि अल्लाह ने चाहा तो मुझे उसका प्रतिफल मिलेगा । मैं बूढ़ा हो गया और अब मौत के दिन बहुत निकट हैं । कुछ आश्चर्य नहीं कि थोड़ी सी बात में ख़ुश हो जाने वाला मेहरबान ख़ुदा उस नेक व्यक्ति की तरह जिसकी शुभचर्चा उसने अपनी पवित्र वाणी अर्थात क़ुरआन करीम में की है कि :-

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِىْٓ اِسْرَآئِيْلَ (احقاف:۱۱) **(व शहिदा शाहिदुन**

❶ अर्थात मौलवी मुहम्मद शाह साहिब लुधियाना । (अनुवादक)

मिन बनी इस्राईल)

मुझ पर भी केवल इतने ही नेक काम पर कृपा कर दे और वह बहुत क्षमा करने वाला और बार-बार रहम करने वाला है ।

अब मैं जो कुछ कहना था कह चुका अब इस विज्ञापन को समाप्त करता हूँ ।

گر نیائد بگوش رغبت کس
بر رسولاں بلاغ باشد و بس [1]

[1] अनुवाद :- पैग़ाम ले जाने वालों की ज़िम्मेदारी केवल पैग़ाम पहुँचाने तक है चाहे वे किसी का भी ध्यानाकर्षित न कर सकें । (अनुवादक)

बटालवी साहिब का हमारी किताब आसमानी फैसला पर जिरह और उसका जवाब
और
आसमानी चमत्कारों के प्रस्तुत करने का निर्णायक प्रयास

शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी ने जो किताब ''जवाब फैसला आसमानी'' में लिखा है उसके पृष्ठ 47, 50, 51, 54 इत्यादि में बहुत कुछ हाथ पैर मारे हैं ताकि किसी तरह लोगों की नज़र में हमारे उस चैलेन्जपूर्ण घोषणापत्र को जो सच्चे ईमान की आज़माइश के लिए मियाँ नज़ीर हुसैन देहलवी और उनके विचारों से सहमत लोगों की सेवा में प्रस्तुत किया गया था, निर्णय के विरुद्ध साबित करके दिखलाएं लेकिन हर एक जानकार और न्यायप्रिय समझ सकता है कि उन्होंने इस बात की बजाय कि हमारे तर्कपूर्ण चैलेन्ज को अपने और अपने शेख नज़ीर हुसैन देहलवी के सर से दूर करते बल्कि उन्होंने और भी अधिक अपने लेख से इस बात को साबित कर दिया कि उनको सच्चाई की ओर आना और अपने शैतानी भ्रमों से छुटकारा पाना किसी तरह स्वीकार ही नहीं । समस्त लोग जानते हैं और शेख जी के कुफ़्रनामा को पढ़कर हर एक व्यक्ति समझ सकता है कि इन महाशय और नज़ीर हुसैन ने बड़ी हठ और पूर्ण विश्वास से इस विनीत के बारे में काफिर और अधर्मी होने का फ़त्वा लिखा है और दज्जाल और पथभ्रष्ट और काफिर नाम रखा है । इन इल्ज़ामों के बारे में यद्यपि मैंने बार-बार बयान किया और अपनी किताबों का अर्थ सुनाया कि कोई कुफ़्र की बात इनमें नहीं है और न मुझे नुबुव्वत का दावा है और न उम्मत से बाहर होने का और न मैं चमत्कार और फरिश्तों और लैलतुल क़द्र का इन्कारी हूँ और आँहज़रत

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ात्मुन्नबीयीन होने का क़ाइल हूँ और पूर्ण विश्वास से जानता और मानता हूँ और इस बात पर दृढ़ ईमान रखता हूँ कि हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमुल अम्बिया हैं और आप के बाद इस उम्मत के लिए कोई नबी नहीं आएगा चाहे नया हो या पुराना, और क़ुरआन करीम का कुछ अंश या एक बिन्दु भी रद्द नहीं होगा। हाँ मुहद्दिस (सुधारक) आएँगे जो अल्लाह से वार्तालाप करते हैं और पूर्ण नुबुव्वत की कुछ विशेषताएँ प्रतिबिम्ब के तौर पर अपने अन्दर रखते हैं और कतिपय कारणों की दृष्टि से नुबुव्वत के रंग से रंगीन किए जाते हैं और उनमें से मैं एक हूँ लेकिन इन महाशयों ने मेरे इन बयानों को न समझा, विशेषकर नज़ीर हुसैन पर बहुत अफ़सोस है जिसने बुढ़ापे में अपनी सारी मालूमात को मिट्टी में मिला दिया । अतः मैंने जब देखा कि यह लोग क़ुरआन और हदीस को छोड़ते हैं और क़ुरआन शरीफ के उल्टे अर्थ करते हैं तब मैंने उनसे पूर्णतः निराश होकर ख़ुदा तआला से आसमानी फैसले की दुआ की और जिस तरह ख़ुदा तआला ने मेरे हृदय में डाला वह स्थिति मैंने फैसले के लिए प्रस्तुत कर दी । यदि इन लोगों के दिल में न्याय और सत्य की चाहत होती तो उसके स्वीकार करने में देर न करते । यह माँग कितनी व्यर्थ है कि एक वर्ष की अवधि को जो ख़ुदा की ओर से एक आदेश है, अपनी ओर से बदल दी जाए और उसके बजाए एक या दो सप्ताह निर्धारित किए जाएँ । ये लोग नहीं जानते कि यह अवधि ख़ुदा की ओर से निर्धारित है, इन्सान तो अपनी ताक़त से कभी हिम्मत ही नहीं कर सकता कि चमत्कार के दिखलाने के लिए कोई समय सीमा निर्धारित कर सके । नबियों ने भी ऐसा नहीं किया और यदि किसी ने अपनी ओर से समयसीमा निर्धारित की तो सज़ा पाई तो फिर

कैसे एक वर्ष, एक सप्ताह से बदल सकता है । मैं चिन्तित हूँ कि इन लोगों के ज्ञान और आध्यात्मज्ञान के दावे कहाँ गए ? क्या ये नहीं जानते कि समय सीमाओं का निर्धारण करना इन्सान का काम नहीं । यदि इनमें से किसी ईश्वाणी पाने वाले को दो सप्ताह में चमत्कार दिखलाने का इल्हाम हुआ है तो बहुत अच्छा, वही अपने चमत्कार दिखलाए मैं उसको स्वीकार करूँगा और यदि मैं उससे मुक़ाबला में विवश रहा तो वह सच्चे ठहरेंगे लेकिन स्मरण रहे कि यह सब झूठ और निरर्थक बात है । सच्ची बात यह है कि ख़ुदा तआला ने उनके दिलों को कठोर कर दिया है और उनकी आँखों पर पर्दे डाल दिए हैं। इसलिए वे न देख सकते हैं और न समझ सकते हैं । न्यायप्रियो ! सोचो कि जो व्यक्ति मुल्हम होता है क्या वह अपनी ओर से कुछ कह सकता है ? फिर मैं कैसे उस समयसीमा को बदल सकता हूँ जिसकी ख़ुदा तआला ने मुझे उनके मुक़ाबले पर सूचना दी है । हाँ यदि वह स्वयं बदल दे तो उसका अधिकार है इन्सान का अधिकार नहीं और न उस पर किसी का आदेश है ।

طلبگار باید صبور و حمول ❶

अगर उनमें सच्ची जिज्ञासा है और नर्क का डर है तो एक वर्ष क्या अधिक है ? इस जगह एक वर्ष से तात्पर्य यह नहीं कि वर्ष के सारे दिन पूरे हो जाएँ बल्कि ख़ुदा तआला अपनी कृपा से इस अवधि के अन्दर ही फैसला कर देगा और वह इस बात पर समर्थ है कि अभी दो सप्ताह भी न गुज़रें और निशान प्रकट हो जाए । मैंने मुक़ाबले के लिए इसलिए लिखा था कि ये लोग नज़ीर हुसैन देहलवी और बटालवी इत्यादि इस

❶ सत्याभिलाषी के लिए पूर्णतः धैर्य रखना अनिवार्य है । (अनुवादक)

विनीत को खुले-खुले तौर पर काफिर, धिक्कृत और लानती और दज्जाल और पथभ्रष्ट लिखते हैं यहाँ तक कि इनके निकट मुझ पर श्रद्धा रखने वाला भी काफ़िर हो जाता है तो फिर इस दशा में आवश्यक था कि ईमानी निशानों की आज़माइश हो। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि मोमिनों को ख़ुदा तआला विशेष निशानों से विशिष्ट कर देता है । अतएव वे उन आसमानी निशानों की दृष्टि से अपने विपक्षी से चाहे वह काफ़िर हो या दोगला या दुराचारी पूर्णत: विशिष्टता पैदा कर लेते हैं । अत: इसी की ओर उन लोगों को बुलाया गया था ताकि मालूम हो जाए कि अल्लाह के निकट कौन मोमिन और कौन ख़ुदा के क्रोध और प्रकोप का पात्र है ।

अगर इन लोगों को अपने ईमान पर कुछ भरोसा होता तो मुक़ाबला करने से पलायन न करते, लेकिन आजतक किसी ने मैदान में आकर प्रतिद्वन्दी का नाम भी नहीं लिया और अन्तत: बहाना यह प्रस्तुत किया कि आप दिखला दें हम स्वीकार करेंगे और उसके साथ ये भी शर्तें लगा दीं कि तब स्वीकार करेंगे जब आसमान से तीतर और बटेर उतरें या कोई कोढ़ी अच्छा हो जाए या एक काने व्यक्ति को दूसरी आंख मिल जाए या लकड़ी का सांप बन जाए या जलती आग में कूद पड़ें और बच जाएँ । देखो पृष्ठ 50 जवाब आसमानी फ़ैसला ।

इन तमाम् अनर्गल बातों का जवाब यह है कि ख़ुदा तआला इन सब बातों पर समर्थ है और इसके अतिरिक्त अनगिनत निशानों के दिखलाने पर भी समर्थ है लेकिन अपनी नीति और इच्छानुकूल काम करता है । पहले के काफिरों ने यही सवाल किया था कि :-

فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ۔(انبیاء:٦)

अगर यह नबी सच्चा है तो मूसा और उसके अलावा बनी इस्राईल के नबियों के निशानों की तरह निशान दिखाए और द्वैतवादियों ने यह भी कहा कि हमारे मुर्दे हमारे लिए ज़िन्दा कर दे या आसमान पर हमारे सामने चढ़ जाए और किताब लाए जिसको हम हाथ में लेकर देख लें इत्यादि इत्यादि । लेकिन ख़ुदा तअला ने अधीनों की तरह उनकी मांगों को नहीं माना और वही निशान दिखलाए जो उसकी इच्छा थी । यहाँ तक कि कई बार निशान मांगने वालों को यह भी कहा गया कि क्या तुम्हारे लिए क़ुरआन का निशान काफ़ी नहीं । यह जवाब बड़ा ही युक्तिपूर्ण था क्योंकि हर एक बुद्धिमान समझ सकता है कि निशान दो प्रकार के होते हैं ।

(1) प्रथम वे निशान हैं कि उनमें और जादू, धोखा और हाथ की सफाई इत्यादि में अन्तर करना बहुत मुश्किल बल्कि असम्भव होता है ।

(2) दूसरे वे निशान हैं जो इन संदिग्ध कामों से पूर्णतः अलग होते हैं और जादू, धोखा, हाथ की सफाई या छल का कोई शक या सन्देह उनमें नहीं पाया जाता । अतः इसी दूसरी प्रकार में से क़ुरआन का चमत्कार है जो पूर्णतः स्पष्ट और हर एक दृष्टि और हर एक पहलू से चमकदार मोती की तरह चमक रहा है । लकड़ी का साँप बनाना कोई विशिष्ट चमत्कार नहीं है। **हज़रत मूसा** ने भी सांप बनाया और जादूगरों ने भी, और अब भी बनाए जाते हैं लेकिन अब तक ज्ञात नहीं हुआ कि जादू के साँप और चमत्कार के साँप में पारस्परिक अन्तर क्या है। इसी तरह रोगों के दूर करने में और सम्मोहन में अभ्यास करने वाले चाहे वे ईसाई हों या हिन्दू या यहूदी या मुसलमान या नास्तिक अधिक महारत रखते हैं और यद्यपि कभी-कभी कोढ़ इत्यादि पुराने रोगों को भी ख़ुदा की इच्छा से

इस अमल के प्रभाव से दूर कर देते हैं । इसलिए केवल रोगों को दूर करने पर निर्भर रहना एक धोखा है जब तक उसके साथ भविष्यवाणी शामिल न हो । इसी तरह आजकल कई तमाशा दिखाने वाले आग में भी कूदते हैं और उसके असर से बच जाते हैं । क्या इस प्रकार के तमाशों से कोई सच्चाई साबित हो सकती है ? तीतर और बटेर का तमाशा शायद आपने कभी देखा नहीं । एक-एक पैसा लेकर किशमिश इत्यादि बरसा देते हैं । अगर आप आजकल के यूरोप के तमाशाइयों को देखें जो एक गुप्त धोखे की राह से सर काट कर भी जोड़ देते हैं तो शायद आप उनके मुरीद हो जाएँ ।

मुझे याद है कि जालन्धर में एक करतब दिखलाने वाले महताब अली नामक व्यक्ति ने जो अन्ततः तौबा करके इस विनीत के सिलसिला-ए-बैअत में दाख़िल हो गया । मेरे मकान पर एक मज्लिस (सभा) में नज़रबन्द का जादू दिखलाया । तब आप जैसे एक सज्जन बोल उठे कि यह तो खुला-खुला चमत्कार है । श्रीमान् ऐसे कामों से कदापि सच्चाई नहीं खुलती बल्कि इस ज़माने में तो और भी शक होता है । बहुत से ऐसे तमाशा करने वाले और जादू दिखलाने वाले फिरते हैं कि आप उनको देखें तो चमत्कारी नाम रखें लेकिन कोई बुद्धिमान जो आजकल के इन करतबों के बारे में अच्छी तरह से जानता है वह ऐसे कामों का नाम खुला-खुला चमत्कार नहीं रख सकता । उदाहरणतः अगर कोई व्यक्ति एक कागज़ के पर्चे को अपने बगल में छुपाकर फिर काग़ज़ के बजाए उसमें से कबूतर निकालकर दिखला दे तो आप जैसा कोई आदमी अगर उसको चमत्कार दिखलाने वाला कहे तो कहे परन्तु एक बुद्धिमान जो ऐसे लोगों के छलों के बारे में अच्छी तरह जानता है वह कदापि उसका काम चमत्कार नहीं रखेगा बल्कि उसको धोखा

और हाथ की सफाई कहेगा । इसी कारण से क़ुरआन करीम और तौरात में सच्चे नबी की पहचान के लिए यह निशानियाँ नहीं ठहराई गयीं कि वह आग से जादू करे या लकड़ी के साँप बनाए या इसी प्रकार के दूसरे करतब दिखलाए बल्कि यह निशानी ठहराई कि उसकी भविष्यवाणियाँ प्रकट हो जाएँ या उसको सच्चा साबित करने के लिए भविष्यवाणी हो क्योंकि दुआ के स्वीकार होने के साथ अगर इच्छानुसार कोई भविष्य की बात ख़ुदा तआला किसी पर प्रकट करे और वह पूरी हो जाए तो निःसन्देह उसकी स्वीकारिता पर एक प्रभाण होगा और यह कहना कि ज्योतिषी या शकुनज्ञ इसमें शामिल हैं यह पूर्णतः बेईमानी और क़ुरआन करीम की शिक्षा का विरोध करना है । क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है :-

فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ (الجن:۲۷) ❶

अतः ख़ुदा तआला ने परोक्ष के विषयों को अपने रसूलों की एक विशेष निशानी ठहराई है ।

फिर दूसरी जगह भी फ़रमाया :-

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِیْ يَعِدُكُمْ۔ (المومن:۲۹) ❷

तो फिर भविष्यवाणी को उपेक्षा की दृष्टि से देखना और लकड़ी का साँप बनाने के लिए मांग करना इन्हीं मौलवियों का काम है जिन्होंने क़ुरआन करीम पर चिन्तन करना छोड़ दिया

❶ **नोट :–** ख़ुदा तआला उन लोगों के अतिरिक्त जिनको वह लोगों के सन्मार्ग के लिए भेजता है किसी दूसरे को अपने परोक्ष ज्ञान से सूचित नहीं करता ।

❷ अगर यह रसूल सच्चा है तो उसकी कतिपय भविष्यवाणियाँ तुम्हारे पक्ष में पूरी होंगी । अर्थात भविष्यवाणियों का पूरा होना भक्त की निशानी है ।

और ज़माने की हवा से अनभिज्ञ हैं ।

चूँकि जब मेरी तरफ से आसमानी फैसला में ईमानी मुक़ाबला के लिए बुलावा है तो फिर मुक़ाबले से भागकर केवल मुझ से ही निशानों को दिखलाने के लिए माँग करना यह उस दशा में मियाँ नज़ीर हुसैन और बटालवी को अधिकार हो सकता है कि जब मेरी तहरीर के अनुसार पहले इस बात को स्वीकार करें कि हम लोग केवल नाम के मुसलमान हैं और वस्तुतः हम में ईमानी नूर और निशानियाँ मौजूद नहीं हैं क्योंकि उनके अहंकार को चूर-चूर करने के लिए एकतरफा निशानों के दिखलाने हेतु मैंने यही शर्त आसमानी फैसला में ठहराई है और यह बात किसी से छुपी नहीं है कि उन लोगों को स्वयं पक्का मोमिन और सब के गुरू और ईश्वाणी पाने का दावा है और मुझको ईमान से खाली और बेनसीब समझते हैं, तो फिर मुक़ाबले के अतिरिक्त फैसले का और कौन सा तरीक़ा है ? हाँ अगर वे अपने ईमानी विशेषताओं के दावों को छोड़ दें तो फिर एकतरफा सुबूत देना हमारे ज़िम्मे है । इस बात का जवाब मियाँ नज़ीर हुसैन और बटालवी साहिब के ज़िम्मे है कि वे पक्के मोमिन और गुरुओं के गुरू होने के दावे के बावजूद क्यों ऐसे आदमी के मुक़ाबले से भागते हैं जो इनकी नज़र में काफ़िर ही नहीं बल्कि सब काफिरों से नीच है और वे किस आधार पर एकतरफा निशान माँगते हैं । अगर ‘‘फैसला आसमानी’’ के जवाब में यह मांग है तो उस किताब की मंशा के अनुसार माँग होनी चाहिए अर्थात अगर अपनी ईमानदारी का कुछ दावा है तो फिर मुक़ाबला करना चाहिए, जिस तरह कि आसमानी फैसला में भी शर्त लिखी हुई है अन्यथा स्पष्ट तौर पर इस बात को स्वीकार करके कि हम सच्चे ईमान से खाली हैं, एक तरफा निशान दिखलाने की मांग करें ।

अन्त में हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं मियाँ गुलाब शाह और नेमतुल्लाह वली साहिब की यह दोनों भविष्वाणियाँ क़ुरआन करीम के अनुसार इस विनीत के लिए खुली-खुली निशानियाँ हैं । जिसमें किसी चालाकी और धोखाधड़ी की गुंजाइश नहीं । अब अगर कोई सूफी या पर्दानशीन जो पर्दे से निकलना नहीं चाहता और बटालवी साहिब और मीर अब्बास अली साहिब लुधियानवी के कथनानुसार मुक़ाबले में निशान दिखलाने को तैयार है तो वह भी ऐसी ही भविष्यवाणियाँ इन्हीं सबूतों के साथ अपने पक्ष में किसी पूर्वकालीन सूफी की ओर से प्रस्तुत करे । हम ख़ुदा तआला की क़सम खाकर वादा करते हैं कि अगर यह साबित हो जाएगा कि वे भी इसी तरह और ऐसी महानता और इसी स्तर के सबूत के साथ अपने बीते हुए ज़माने में पाए गए हैं तो हम सजाए-ए-मौत पाने के लिए भी तैयार हैं। इस विनीत की अपनी पूर्व की भविष्यवाणियाँ **तीन हज़ार** के लगभग हैं जो अधिकतर दुआ स्वीकार होने के बाद प्रकट हुई हैं। उनमें से एक **दिलीप सिंह** के रोके जाने की भविष्यवाणी है अर्थात यह कि वह अपने पंजाब में आने के इरादे में नाकाम रहेगा । यह भविष्यवाणी संक्षिप्त रूप से अखबार में छप चुकी है और सैकड़ों आदमियों को मौखिक तौर पर भी सुनाई जा चुकी है । इसी प्रकार पंडित **दयानन्द** की मृत्यु के बारे में भविष्यवाणी और **शेख़ महर अली**[1] सहिब की विपत्ति और फिर रिहाई

---

[1] शेख़ महर अली साहिब के हाथ में क़ुरआन शरीफ देकर इस भविष्यवाणी के बारे में उनसे क़सम खिलाकर पूछना चाहिए क्योंकि अगर कोई स्वार्थपन या मौलवियों के डर से इन्कार करे तो क़सम खाने के बाद तो कदापि इन्कार नहीं कर सकता अगर करेगा तो झूठी क़सम खाने के कारण शीघ्र शर्मिन्दा हो जाता है ।

की भविष्यवाणी, **बटालवी** साहिब के मुख़ालिफ हो जाने के बारे में भविष्यवाणी । इनके अलावा और भी भविष्यवाणियाँ हैं जिनका विस्तारपूर्वक वर्णन करने के लिए अत्यधिक समय की आवश्यकता है । अगर विरोधी पक्ष के मौलवियों में कुछ ईमान है तो इन भविष्यवाणियों के बारे में भी एक जलसा (समारोह) आयोजित करके पहले हमसे सबूत लें, फिर उसके अनुसार अपनी ओर से भविष्यवाणियों का सबूत दें और यदि अपने खोखलेपन के कारण इन दोनों प्रकार के मुक़ाबला न कर सकें तो यह भी अधिकार है कि एक साल की छूट पर भविष्य के लिए आज़माइश कर लें, किसी बड़े झगड़े की ज़रूरत नहीं । हर एक भविष्यवाणी जो किसी दुआ के स्वीकार हो जाने के कारण प्रकट हो, किसी अखबार में उसके प्रकट होने की समयसीमा की शर्त के साथ छपवा दें और इस तरफ से भी यही कार्यवाही हो । साल बीतने के बाद स्वयं पता लग जाएगा कि ख़ुदा की ओर से कौन समर्थन प्राप्त है और कौन लज्जित और धिक्कृत है । अगर यह भी न करें तो सब लोग याद रखें कि इन मुल्लाओं का इरादा केवल सच को छुपाना और ईर्ष्या और द्वेष करना है, सच जानना उद्देश्य नहीं । अगर इन को समझ हो तो एक बड़ा निशान यह भी है कि ये लोग दिन रात ख़ुदा के इस नूर को बुझाने के लिए कोशिश कर रहे हैं और हर प्रकर की चालबाज़ियाँ काम में ला रहे हैं और लोगों को बहका रहे हैं और सच को मिटाने के लिए नाखूनों तक ज़ोर लगा रहे हैं, कुफ़्र के फत्वे लिख रहे हैं और दु:ख देने के तमाम् षडयन्त्र रच रहे हैं यहाँ तक कि बटालवी साहिब ने लोगों को उकसाया है कि गवर्नमेन्ट के सामने जाकर धरना दें और शोर मचाएँ । अत: धोखाधड़ी और चापलूसी की कोई कोशिश नहीं

उठा रखी और एक दुनिया को अपने साथ कर लिया । जैसा कि मैंने बटालवी साहिब को इन सारी घटनाओं के ज़ाहिर होने से पहले इस इल्हाम की खबर दी थी कि मैं अकेला हूँ और खुदा मेरे साथ है अब वही दशा पैदा हो रही है लोगों ने यहाँ तक दुश्मनी की है कि रिश्ते-नाते को छोड़ दिया है। इन तमाम् कारसाज़ियों के बावजूद जो चरमसीमा को पहुँच गई हैं अन्ततः हम **सफलता पा जाएँ** तो इससे बढ़कर और क्या **निशान होगा** ?

अगर किसी के आँखें हों तो इस विनीत पर जो कुछ खुदा तआला की अनुकंपाएँ हो रही हैं वे सब निशान ही हैं। देखो ख़ुदा तआला क़ुरआन करीम में स्पष्ट रूप से फरमाता है कि जो मुझ पर लांछन लगाए उससे बढ़कर कोई अत्याचारी नहीं और मैं शीघ्र लांछन लगाने वाले को पकड़ता हूँ और उसको मोहलत नहीं देता लेकिन इस विनीत के मुजद्दिद, **मसीले-मसीह** (अर्थात मसीह का समरूप) और ख़ुदा से ईशवाणी पाने के दावे पर अब ख़ुदा की कृपा से ग्यारह वर्ष पूरे होने को हैं । क्या यह निशान नहीं है अगर ख़ुदा तआला की ओर से यह काम न होता तो किस तरह पूरे दस वर्ष तक जो आयु का एक भाग है, रह सकता था । फिर मैं कहता हूँ कि क्या यह निशान नहीं है कि ख़ुदा की ओर से खबर पाकर भविष्यवाणियाँ करने के मुकाबले पर आज़माइश के लिए कोई इस विनीत के सामने नहीं आ सकता और अगर आए तो ख़ुदा तआला उसे बहुत शर्मिन्दा करेगा । इसी तरह मुझ पर ख़ुदा तआला के सैकड़ों समर्थन हो रहे हैं । मैं ख़ुदा तआला का बाग़ हूँ जो मुझे काटने का इरादा करेगा वह स्वयं काटा जाएगा । मुखालिफ लज्जित होगा और इनकार करने वाला शर्मसार ।

ये सब निशान हैं, परन्तु उनके लिए जो देख सकते हैं ।

اے سخت اسیرِ بدگمانی
وے بستہ کمر بہ بدزبانی
سوزم کہ چساں شوی مسلماں
وایں طرفہ کہ کافرم بخوانی

अनुवाद :- हे बद्‌गुमानी में डूबे हुए और गाली गलौज पर तत्पर व्यक्ति, मैं तो इस ग़म से जल रहा हूँ कि तू किस तरह मुसलमान होगा परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि उल्टा तू मुझे ही काफ़िर कहता है । (अनुवादक)

आध्यात्मिकता का प्रचार

لَهُمُ الْبُشْرٰی فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا

گر خود آدمی کاہل نباشد در تلاشِ حق

خدا خود راہ نماید طلبگارِ حقیقت را

अनुवाद :- अगर व्यक्ति खुद सच की तलाश में सुस्ती न करे तो ख़ुदा स्वयं सत्याभिलाषी को सदमार्ग दिखा देता है । (अनुवादक)

यह बात क़ुरआन करीम और हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कथनों से सिद्ध है कि मोमिन सच्चे स्वप्न देखता है और उसके लिए दिखाए भी जाते हैं विशेषकर जब मोमिन लोगों की दृष्टि में तिरस्कृत, लज्जित, धिक्कृत, बहिष्कृत, काफिर और दज्जाल अपितु बहुत बड़ा काफ़िर और सृष्टि में से सर्वाधिक निकृष्ट, तो इस उलझन निराशा के समय में ख़ुदा तआला की ओर से मोमिन के साथ जो कुछ दया और उपकार से भरपूर वार्तालाप होते हैं उनको कौन जानता है ।

رحمتِ خالق کہ حرزِ اولیاست

ہست پنہاں زیرِ لعنت ہائے خلق

अनुवाद :- ख़ुदा की रहमत जो ख़ुदा के परमभक्तों की शरण है वह लोगों की निन्दा के नीचे छुपी होती है । (अनुवादक)

यह विनीत ख़ुदा तआला के उपकारों का धन्यवाद अदा नहीं कर सकता कि इस कुफ्र के फ़त्वे के समय चारों ओर से

इस ज़माने के मौलवियों की आवाज़ें आ रही हैं कि لَسْتَ مُؤمِنًا (तू मोमिन नहीं है) और अल्लाह तआला की ओर से यह आवाज़ है कि قُلْ اِنِّی اُمِرْتُ وَاَنَا اوَّلُ الْمُوْمِنِیْنَ ❶ एक तरफ मौलवी साहिबान कह रहे हैं कि किसी तरह इस आदमी को जड़ से उखाड़ कर फेंक दो और एक तरफ यह ईशवाणी होती है कि :

يَتَرَبَّصُوْنَ عَلَيْكَ الدَّوَائِرَ عَلَيْهِمْ دَائِرَةُ السَّوْءِ ❷

और एक तरफ वे कोशिश कर रहे हैं कि इस आदमी को अत्यधिक लज्जित और शर्मिन्दा करें और एक तरफ ख़ुदा वादा कर रहा है कि :-

اِنّی مُھین مَن اراد اھانتک۔ اللّٰہ اجرک۔ اللّٰہ یعطیک جلالک ❸

और एक तरफ मौलवी लोग फ़त्वे पर फ़त्वे लिख रहे हैं कि इस आदमी की आस्था से सहमति और अनुसरण से आदमी काफिर हो जाता है और एक तरफ ख़ुदा तआला अपनी इस ईशवाणी पर लगातार ज़ोर दे रहा है कि :-

قل ان کنتم تحبون اللّٰہ فاتّبعونی یحببکم اللہ ❹

❶ अनुवाद - तू घोषणा कर दे कि ख़ुदा ने मुझे सूचित किया है कि इस ज़माने में मैं सबसे पहले ईमान लाता हूँ । (अनुवादक)

❷ अनुवाद - वे तुझ पर आपत्तियाँ आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं । (अनुवादक)

❸ अनुवाद - जो तुझे लज्जित करना चाहेगा, मैं उसे लज्जित करूँगा । अल्लाह ही तेरा प्रतिफल है, अल्लाह तुझे तेरा प्रताप प्रदान करेगा । (अनुवादक)

❹ अनुवाद - तू घोषणा कर दे कि, अगर तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो वह तुम से प्रेम करेगा । (अनुवादक)

अत: यह समस्त मौलवी साहिबान ख़ुदा तआला से लड़ रहे हैं । अब देखिए कि विजय किसकी होती है ।

अन्तत: स्पष्ट रहे कि इस समय इस लेख से मेरा उद्देश्य यह है कि पंजाब और हिन्दुस्तान से कई लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दर्शन करने के स्वप्न और आकाशवाणियां भी इस विनीत के बारे में लिखकर भेजी हैं । जिनका लेख लगभग और अधिकतर यही होता है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को स्वप्न में देखा है या इल्हाम के द्वारा ख़ुदा तआला की ओर से मालूम हुआ है कि यह आदमी अर्थात यह विनीत ख़ुदा तआला की ओर से है इसको स्वीकार करो । अत: कई लोगों ने ऐसे स्वप्न भी बयान किए कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अत्यधिक क्रोध की दशा में दिखाई दिए और लगा कि मानो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पवित्र मक़बरे से बाहर बैठे हैं और कहते हैं कि ऐसे समस्त लोग जो इस व्यक्ति अर्थात इस विनीत को जानबूझ कर सता रहे हैं निकट है कि उन पर **ख़ुदा का प्रकोप** आए । पहले इस विनीत ने इन स्वप्नों की ओर ध्यान न दिया परन्तु अब मैं देखता हूँ कि बड़ी अधिकता से यह सिलसिला शुरू हो गया है । यहाँ तक कि कुछ लोग केवल स्वप्नों को देखकर ही ईर्ष्या और दुश्मनी को छोड़कर पक्के सदभावकों में शामिल हो गए और इसी आधार पर आर्थिक सहायता देने लगे । अतएव मुझे इस समय याद आया कि बराहीन-ए-अहमदिया के पृष्ठ 241 में यह इल्हाम लिखा है जिस पर दस वर्ष की अवधि बीत गई और वह यह है :-

ينصرک رجالٌ نوحی الیھم من السماء

अर्थात ऐसे लोग तेरी सहायता करेंगे जिन पर हम

आसमान से ईशवाणी करेंगे । अतः वह समय आ गया है इसलिए मेरे निकट हितकर होगा कि जब इन स्वप्नों और आकाशवाणियों का एक उचित अन्दाज़ा हो जाए तो उनको एक अलग किताब की दशा में प्रकाशित किया जाए क्योंकि यह भी एक आसमानी गवाही और ख़ुदा की नेमत है और ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि :-

واما بنعمت ربّک فحدّث (الضحیٰ:۱۲) ❶

लेकिन इससे पहले आवश्यक तौर पर यह सूचना दी जाती है कि अब हर एक व्यक्ति जो कोई इस विनीत के बारे में स्वप्न या आकाशवाणी देखकर पत्र द्वारा उससे अवगत कराना चाहें तो उन पर अनिवार्य है कि ख़ुदा तआला की क़सम खाकर अपने पत्र के द्वारा उस बात को प्रकट करें कि हमने निश्चित और यक़ीनी तौर पर यह स्वप्न देखा है और यदि हमने इसमें कुछ मिलाया है तो हम पर इसी दुनिया और परलोक में भी ख़ुदा की लानत और प्रकोप पड़े और जो लोग पहले क़सम खाकर अपने स्वप्न वर्णन कर चुके हैं उनको पुनः लिखने की आवश्यकता नहीं लेकिन वे समस्त लोग जिन्होंने स्वप्न या आकाशवाणियां तो लिखकर भेजी थीं लेकिन उनके वे बयान पक्की क़सम खाकर नहीं भेजे गए थे । इसलिए उन पर अनिवार्य है कि पुनः फिर उन स्वप्नों या आकाशवाणियों को पक्की क़सम के साथ लिखकर भेजें और स्मरण रहे कि बिना क़सम के किसी का कोई स्वप्न या आकाशवाणी या कश्फ नहीं लिखा जाएगा और क़सम भी उस ढंग की होनी चाहिए जो हमने अभी बयान की है ।

❶ अनुवाद - अपने रब्ब की नेमत का वर्णन कर । (अनुवादक)

इस जगह यह भी प्रचार के तौर पर लिखता हूँ कि सत्याभिलाषी, जो **ख़ुदा की पकड़** से डरते हैं वे बिना छान-बीन इस ज़माने के मौलवियों का अनुसरण न करें और आख़िरी ज़माने के मौलवियों से जिस तरह पैग़म्बरे ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने **डराया है** उसी तरह डरें और उनके फत्वों को देखकर हैरान न हो जाएं क्योंकि यह फत्वे कोई नई बात नहीं और यदि इस विनीत पर सन्देह हो और वह दावा जो इस विनीत ने किया है उसकी सच्चाई के बारे में दिल में शंका हो तो मैं शंका दूर करने का एक आसान तरीक़ा बताता हूँ जिससे अगर अल्लाह चाहे तो एक सत्याभिलाषी संतुष्ट हो सकता है और वह तरीका यह है कि सच्ची तौबा करके रात में दो रकअत नमाज़ पढ़ें जिसकी पहली रकअत में सूर: **यासीन** और दूसरी रकअत में इक्कीस बार सूर: **इख़्लास** हो । फिर इसके बाद तीन सौ बार **दुरूद शरीफ** और तीन सौ बार **इस्तिग़फ़ार** पढ़कर ख़ुदा तआला से दुआ मांगे कि हे सामर्थ्यवान दयालु ख़ुदा ! तू छुपी हुई परिस्थितियों को जानता है और हम नहीं जानते तथा मान्य, धिक्कृत, झूठा और सच्चा तेरी दृष्टि से छुपा नहीं रह सकता । अतः हम विनम्रतापूर्वक तुझसे दुआ करते हैं कि यह व्यक्ति जो तेरे निकट मसीह मौऊद और महदी और युग का सुधारक होने का दावा करता है, कैसा है क्या सच्चा है या झूठा, मान्य है या धिक्कृत ? अपनी कृपा से यह बात स्वप्न या कश्फ या आकाशवाणी द्वारा हम पर प्रकट कर दे ताकि यदि धिक्कृत है तो उसको स्वीकार करके हम पथभ्रष्ट न हों और यदि मान्य है और तेरी तरफ़ से है तो उसके इन्कार और अपमान करने से **हम नष्ट न हो जाएँ** । हमें हर एक प्रकार की आज़माइश से बचा, कि हर एक शक्ति तुझ को ही है । आमीन ! भलाई मांगने की यह दुआ कम से

कम दो सप्ताह करें लेकिन अपने अहंकार से दूर रह कर क्योंकि जो व्यक्ति पहले ही ईर्ष्या-द्वेष से भरा हुआ है और पूर्णत: बदगुमानी उस पर छा गई है । अगर वह स्वप्न में उस व्यक्ति का हाल जानना चाहे जिसको वह बहुत ही बुरा जानता है तो शैतान आता है और उस अन्धकार के अनुसार जो उसके दिल में पहले से है और अधिक अन्धकारमय विचार अपनी ओर से उसके दिल में डाल देता है, फिर उसका पिछला हाल पहले से भी बुरा हो जाता है । इसलिए अगर तू ख़ुदा तआला से कोई बात जानना चाहे तो अपने दिल को नफ़रत और वैमनस्य से पूर्णत: स्वच्छ कर और अपने आपको पूर्णत: निष्पक्ष रखकर और घृणा और प्रेम दोनों पहलुओं से अलग होकर उससे सन्मार्ग का ज्ञान मांग । वह अवश्य अपने वादा के अनुसार अपनी ओर से वह प्रकाश प्रदान करेगा जिसमें अहंकारपूर्ण भ्रमों का कोई अंश न होगा । इसलिए हे सत्याभिलाषियो ! इन मौलवियों की बातों से आज़माइश में मत पड़ो । उठो और कुछ अधिक परिश्रम करके उस शक्तिशाली, शक्तिमान, बहुत ज्ञाता और स्वच्छन्द पथ-प्रदर्शक ख़ुदा से सहायता मांगो और देखो कि अब मैंने यह आध्यात्मिक प्रचार भी कर दिया है, भविष्य में तुम्हें अधिकार है ।

उस पर सलामती हो जिसने सन्मार्ग का अनुसरण किया ।

प्रचारक

गुलाम अहमद

शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी द्वारा दिए गए कुफ़्र के फ़त्वे की हालत

इस फ़त्वे को मैंने शुरू से अन्त तक पढ़ा । जिन आरोपों के आधार पर यह फ़त्वा लिखा है अगर अल्लाह चाहेगा तो बहुत जल्द उन आरोपों के ग़लत और घटना के विपरीत होने के बारे में इस विनीत की ओर से एक किताब प्रकाशित होने वाली है जिसका नाम 'दाफिउल वसाविस' है । इसके अतिरिक्त मुझको इन लोगों के लान-तान पर कुछ अफ़सोस नहीं और न कुछ अन्देशा है बल्कि मैं खुश हूँ कि मियाँ नज़ीर हुसैन और शेख़ मुहम्मद हुसैन बटालवी और उनके अनुयायियों ने मुझको काफिर, तिरस्कृत, धिक्कृत, दज्जाल, पथभ्रष्ट बेईमान नारकी और सबसे बड़ा काफिर कह कर अपने दिल की वह भड़ास निकाल ली जो ईमानदारी और तक़्वा की दृष्टि से कदापि नहीं निकल सकती थी और जितनी मेरी तर्कपूर्ण बहस और मेरी सच्चाई की कड़वाहट से उन लोगों को चोट पर चोट पहुँची है उस बड़े सदमे का ग़म ग़लत सिद्ध करने के लिए इसके अतिरिक्त दूसरा कोई तरीक़ा भी तो नहीं था कि लानतों पर उतर आते । मुझे इस बात को सोचकर भी खुशी है कि जो कुछ यहूदियों के धर्माचार्यों और मौलवियों ने अन्ततः हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को तोहफा दिया था वे भी तो यही लानतें और कुफ़्र के फ़त्वे थे, जो यहूदियों के इतिहास और चारों इन्जीलों से स्पष्ट है । अतः फिर मुझे मसीह के समरूप होने की दशा में इन लानतों का शोर सुनकर बहुत ही खुश

होना चाहिए क्योंकि जिस तरह ख़ुदा तआला ने मुझको दज्जाल के मूल आशय को नष्ट करने के लिए ईसा मसीह की मूल विशेषताओं से विभूषित किया है उसी तरह ही उसने उस वास्तविकता के बारे में जो जो उपकार और अपकार थे उनसे भी खाली न रखा लेकिन अगर कुछ अफ़सोस है तो केवल यह है कि बटालवी साहिब को इस फ़त्वे के तैयार करने में यहूदियों के धर्माचार्यों से भी अधिक छल-कपट और धोखेबाज़ी करनी पड़ी और वह छल-कपट और धोखेबाज़ी तीन प्रकार की है ।

प्रथम – कई लोग जो मौलवी नहीं थे और फ़त्वे देने का अधिकार नहीं रखते थे, वे केवल कुफ़्र का फत्वा देने वालों की संख्या बढ़ाने के लिए मुफ़्ती बनाए गए थे ।

द्वितीय – कई ऐसे लोग थे जो मूर्ख और खुल्लम-खुल्ला दुराचार और बड़े-बड़े दुराचारों में डूबे थे । उन्हें बड़े विद्वान और शरीअत पर चलने वाले समझकर उनकी मुहरें लगाई गईं ।

तृतीय – जो विद्वान और ईमानदार थे उन्होंने वस्तुतः उस फ़त्वे पर मुहरें नहीं लगाईं बल्कि बटालवी साहिब ने सरासर चालाकी और झूठ से स्वयं उनका नाम उसमें जड़ दिया ।

इन तीनों प्रकार के लोगों के बारे में हमारे पास लिखित प्रमाण हैं । अगर बटालवी साहिब या किसी और साहिब को इसमें सन्देह हो तो वह लाहौर में एक जलसा आयोजित करके हम से प्रमाण मांगें ।

تا سیاہ رُوئے شود ہر کہ دروغش باشد (ताकि हर झूठे का मुँह काला हो - अनुवादक)

यों तो कुफ़्र का फ़त्वा देना कोई नई बात नहीं है । इन मौलवियों की पैतृक परम्परा यही चली आती है कि ये लोग एक गूढ़ बात सुनकर तुरन्त अपने कपड़ों से बाहर आ जाते

हैं। चूँकि ख़ुदा तआला ने यह बुद्धि तो इनको दी ही नहीं कि बात की तह तक पहुँचें और गूढ़ रहस्यों की गहरी हक़ीक़त को जान सकें । इसलिए अपनी अज्ञानता की हालत में कुफ़्र का फ़त्वा देने की ओर दौड़ते हैं । औलिया किराम[1] में से कोई एक भी ऐसा नहीं जो इनके कुफ़्र के फ़त्वे से बचा हो । यहाँ तक कि अपने मुँह से कहते हैं कि जब महदी मौऊद[2] आएगा तो मौलवी लोग उसको भी कुफ़्र का फ़त्वा देंगे और ऐसा ही हज़रत ईसा जब उतरेंगे तो उन्हें भी कुफ़्र का फ़त्वा दिया जाएगा । इन बातों का जवाब यही है कि हे महाशयो ! आप लोगों से ख़ुदा की पनाह । वह ख़ुदा स्वयं अपने चुने हुए भक्तों को आप लोगों के उपद्रव से बचाता आया है अन्यथा आप लोगों ने तो डायन की तरह उम्मते मुहम्मदिया के समस्त औलिया किराम को खा जाना था । अपनी बदज़ुबानी से न पहलों का छोड़ा न पिछलों को । आप अपने हाथ से उन निशानियों को पूरी कर रहे हैं जो स्वयं ही बतला रहे हैं । आश्चर्य है कि ये लोग आपस में भी तो सुधारणा नहीं रखते । कुछ समय पहले यही एक ख़ुदा का दम भरने वालों की धर्मान्धता पर मदारुल हक़ में तीन सौ के निकट मुहरें लगी थीं। जब कुफ़्र का फ़त्वा देना इतना सस्ता है तो फिर कुफ़्र के फ़त्वों से कोई क्यों डरे परन्तु अफसोस तो यह है कि मियाँ नज़ीर हुसैन और शेख बटालवी ने कुफ़्र के इस फ़त्वे में जालसाज़ी से बहुत काम लिया है और तरह-तरह के झूठ घड़ कर अपना अन्जाम ठीक करना चाहा है । इस छोटी सी किताब में हम विस्तारपूर्वक उन धोखाधड़ियों का वर्णन नहीं कर सकते जिनको शेख मुहम्मद हुसैन बटालवी ने शेख नज़ीर

[1] ऋषि, मुनि, वली । (अनुवादक)

[2] जिसके आने का पहले से वादा दिया गया था । (अनुवादक)

हुसैन देहलवी की इच्छानुसार अपने कुफ़्रनामा में लिखकर अपना कर्मपत्र ठीक करना चाहा है । केवल उदाहरण के तौर पर एक मौलवी साहिब का पत्र उनके दोहों सहित नीचे लिखा जा रहा है :-

सेवा में,

लाभ पहुँचाने वाले युग के सुधारक मसीह और महदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब

आप पर ख़ुदा की कृपा हो

अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातोहू

दीन दु:खियों को लाभ पहुँचाने वाले, पटियाला से आप के जाने के बाद शहर के लोगों ने मुझ को बहुत तंग किया यहाँ तक कि मस्जिदों में नमाज़ पढ़ने से रोका गया । मैंने अपने कई मित्रों को अकारण का आरोप दूर करने हेतु लिखा कि मेरा अक़ीदा अहले सुन्नत वल जमाअत के अनुसार है और ख़त्मे नुबुव्वत, फरिश्तों, नबियों के चमत्कारों और लैलतुल क़द्र इत्यादि से इन्कार करना कुफ़्र का कारण समझता हूँ । मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी व्यवस्थापक अखबार इशाअतुस्सुन्ना ने मेरे उसी लेख को लेकर अपने कुफ़्रनामा में जो आपके लिए तैयार किया था लिख दिया । मैंने सूचना पाकर मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब के पास लिखा कि कुफ़्र के फ़त्वे पर जो मेरी ओर मंसूब करके इबारत लिखी गई है उसे काट देना चाहिए, क्योंकि मैं हज़रत मिर्ज़ा साहब को काफ़िर कहने वाले को स्वयं काफिर और बे-दीन समझता हूँ । मौलवी साहिब ने इसका कोई जवाब नहीं भेजा । इसके बाद मुझे ज्ञात हुआ कि उन्होंने मेरा नाम कुफ़्र का फ़त्वा देने वालों के साथ मिलाकर छाप दिया । अत: मेरे फ़त्वे की यह वास्तविकता है । यह विनीत हज़रत मिर्ज़ा साहिब से बैअत कर चुका है । ख़ुदा के लिए

इस विनीत को अपनी जमाअत से अलग न समझें । मैं इस अकरनीय गुनाह से ख़ुदा तआला के समक्ष तौबा करता हूँ और हुज़ूर से माफ़ी माँगता हूँ और अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम से कुछ अश्आर लिखे हैं वे भी नीचे लिखता हूँ और आशा करता हूँ कि मेरा यह सारा लेख घोषणापत्र सहित छपवाकर प्रकाशित कर दिया जाए ।

1. موجب کفر است تکفیرِ تو اے کانِ کرم — واں مواہیر و فتاویٰ رہزنِ راہِ کرم
2. آرزو دارم کہ جان و مال قُربانت کُنم — ایں تمنّایم برارد کارسازِ قادرم
3. چوں بتابم رو ز تو حاشا و کلّا ایں کجا — من فدائے روئے تو اے رہبرِ دیں پرورم
4. دینِ مردہ را بقالب جاں در آمد از دمت — چوں ازیں انفاس اعراضی کُنم اے مہترم
5. من کجا و ایں طور بدعہدی و بیراہی کجا — خادمم تا زندہ ہستم واز دل و جاں چاکرم
6. حملہ ہا کردند ایں غولانِ راہِ حق بہ من — رہ زدندے گر نبودے لطفِ یزداں رہبرم
7. ایں یہودی سیرتاں قدرِ ترا نشنا ختند — چوں نبیؑ ناصری نفریں شنیدم لاجرم
8. ہر کہ تکفیرت کند کافر ہماں ساعت شود — حق نگہدارد مرا ازیں زمرۂ نامحترم
9. برمنِ اعمیٰ بہ بخش اے حضرتِ مہرِ منیر — گر خطا دیدی ازاں بگذر کہ من مستغفرم
10. تا روانم ہست درتن از دل و جانم غلام — لطف فرما کز تذلّل بردرِ تو حاضرم
11. نورِ ماہِ دینِ احمد بروجودت شد تمام — آمدی در چاردہ اے بدرِ تام و انورم
12. حسبِ تبشیرِ نبیؐ بر وقت خود کردی ظہور — السَّلام اے رحمتِ ذاتِ جلیل و اکبرم
13. مشکلاتِ دینِ حق بردستِ تو آساں شدند — میکنی تجدید دین از فضلِ ربِّ ذوالکرم
14. ازرہِ منّت درُونم رامُسلماں کردۂ
گر نباشم جاں نثارِ آستانت کافرم

अनुवाद :- 1. हे कृपानिधि ! तुझे काफिर कहना स्वयं

काफिर हो जाने का कारण है और ये फत्वा-ए-कुफ्र के दक्ष कलाकार वस्तुत: कृपा के मार्ग में डाकू हैं ।

2. मेरी इच्छा है कि मैं अपना सब कुछ तुझ पर न्योछावर कर दूँ । मेरी इस इच्छा को काम सवाँरने वाला ख़ुदा नि:सन्देह पूरा कर देगा ।

3. मैं तुझ से किस तरह मुँह मोड़ सकता हूँ, कदापि ऐसा नहीं हो सकता । हे मेरे धर्म संरक्षक और संवर्धक मार्गदर्शक ! मैं तुझ पर न्योछावर हूँ ।

4. बुझे हुए धर्म में तेरे आने से रोशनी आ गई, तो फिर हे मेरे मार्ग दर्शक ! मैं ऐसे पवित्र लोगों से किस तरह मुँह मोड़ लूँ ।

5. मैं कहाँ और वादाख़िलाफ़ी और पथभ्रष्टता का तौर तरीका कहाँ । मैं तो तेरा सेवक हूँ और जीवित हूँ और दिलोजान से तेरा चाकर हूँ ।

6. सच्चाई की राह में इन लुटेरों ने मुझ पर हमला किया अगर मेरे मार्गदर्शक ख़ुदा की कृपा न होती तो मुझे रास्ते में ही मार डालते ।

7. इन यहूदी प्रवृत्ति लोगों ने तेरे मकाम और मर्तबा को नहीं पहचाना, मैं ने हज़रत ईसा इब्ने मरयम की तरह नि:सन्देह ला'नतें सुनी हैं ।

8. हर एक जो तुझे काफिर कहता है वह उसी समय काफिर हो जाता है, अल्लाह तआला मुझे इन नीच लोगों के गिरोह से बचाए ।

9. हे मेरे स्वामी ! मुझ नासमझ पर दया और कृपा कर । अगर मुझ से कोई ग़लती हो गई हो तो उसे क्षमा कर कि मैं क्षमा का मुहताज हूँ ।

10. जब तक शरीर में प्राण हैं मैं दिलोजान से अपका

सेवक हूँ । मुझ पर बख़्शिश कर मैं विनम्रतापूर्वक तेरी चौखट पर हाज़िर हूँ ।

11. दीन-ए-अहमद के चाँद का नूर तुझ पर पूर्ण हो गया, इसलिए हे पूर्णत: चमकने वाले चाँद ! तू चौदहवीं सदी में आया ।

12. नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की भविष्यवाणी के अनुसार तू अपने समय पर प्रकट हुआ है । हे मेरे प्रतापी और महान ख़ुदा की पूर्ण रहमत तुझ पर सलाम ।

13. ख़ुदा के धर्म की मुश्किलें तेरे हाथ से आसान हो गईं आप ख़ुदा की कृपा से धर्म को ताज़ा कर रहे हैं ।

14. आप ने उपकार करके मेरे दिल को मुसलमान बना दिया ऐसे में अगर मैं आपकी चौखट पर न्योछावर न हूँ तो मैं काफिर हूँगा । (अनुवादक)

अगर श्रीमान की पुस्तक में कोई स्थान रिक्त हो तो मेरे हमदर्द गुरू का भी यह घोषणापत्र प्रकाशित करने की कृपा करें।

घोषणापत्र

हमारे इमाम तथा हमारे एवं संसार के प्रतिष्ठित मसीह मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी के लिए जो फ़त्वा मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी सम्पादक अखबार इशाअतुस्सुन्ना ने अपने अखबार में प्रकाशित किया है । उसके पटियाला के मौलवी साहिबान की सूची में मेरे कुछ मित्रों ने मेरे नाम के मौलवी अब्दुल्लाह पटियालवी के नाम को मेरा नाम समझा है और कुछ मित्रों ने पूछताछ के लिए मेरे नाम पत्र भी भेजे हैं। सम्पादक, अखबार इशाअतुस्सुन्ना ने उस नाम के साथ यह नोट लिखकर पाठकों को और भी सन्देह में डाला है कि ''यह मौलवी साहिब भी पहले मिर्ज़ा साहिब के अनुयायी थे'' इसलिए मैं सब लोगों को सूचित करता हूँ कि मौलवी अब्दुल्लाह पटियालवी दूसरे व्यक्ति हैं और वह कभी पहले भी मिर्ज़ा साहिब के श्रद्धालु और अनुयायी न थे और न हैं । शेष रहा यह विनीत तो मैं उसी तरह इस्लाम और मुसलमानों का प्रेमी और श्रद्धालु तथा विनीत हूँ।

उद्घोषक

विनीत

मुहम्मद अब्दुल्लाह खाँ द्वितीय

अरबी अध्यापक महेन्द्र कालेज पटियाला

04 ज़ीक़ादा सन् 1309 हिजरी

तिब्बे रूहानी

यह किताब स्वर्गीय हज़रत हाजी मुंशी अहमद जान साहब की रचनाओं में से है । आदरणीय हाजी साहिब ने इस किताब में गुप्त रोगों के दूर करने और उनके कारणों के उस ज्ञान का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है जिसको वर्तमान समय के बड़े-बड़े लोग, पीरज़ादे और सज्जाद: नशीन गुप्तरूप से अपने विशिष्ट उत्तराधिकारियों को सिखाया करते थे और एक बड़ा चमत्कार समझा जाता था जिसको सीखने की कोशिश में अब भी कतिपय मौलवी लोग दूर-दूर की यात्रा करते हैं । इसलिए केवल ख़ुदा के लिए हर एक को सूचित किया जाता है कि इस किताब को मंगवाकर अवश्य पढ़ें कि यह भी उन तमाम ज्ञानों में से एक ज्ञान है जो नबियों को मिले थे अपितु हज़रत मसीह के चमत्कार तो इसी ज्ञान के स्रोत में से थे ।

किताब की कीमत एक रुपया है । साहिबज़ादा इफ़्तिख़ार अहमद साहिब जो लुधियाना मुहल्ला जदीद में रहते हैं उनके पास लिखने से नकद मिल सकती है ।